# तुहफ़ा ग़ज़नवियः

**लेखक**
हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम

| | |
|---|---|
| नाम पुस्तक | : तुहफ़ा ग़ज़नविय: |
| Name of book | : Tuhfa Ghaznaviya |
| लेखक | : हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम |
| Writer | : Hazrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani Masih Mouood Alaihissalam |
| अनुवादक | : डॉ अन्सार अहमद, पी एच. डी., आनर्स इन अरबिक |
| Translator | : Dr Ansar Ahmad, Ph. D, Hons in Arabic |
| टाईपिंग, सैटिंग | : महवश नाज़ |
| Typing Setting | : Mahwash Naaz |
| संस्करण तथा वर्ष | : प्रथम संस्करण (हिन्दी) मई 2018 ई० |
| Edition. Year | : 1st Edition (Hindi) May 2018 |
| संख्या, Quantity | : 1000 |
| प्रकाशक | : नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब) |
| Publisher | : Nazarat Nashr-o-Isha'at, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur, (Punjab) |
| मुद्रक | : फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर, (पंजाब) |
| Printed at | : Fazl-e-Umar Printing Press, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur (Punjab) |

## बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
## नहमदुहू व नुसल्ली

اے پئے تحقیر من بستہ کمر
نیست جُز ہجو من کاردگر

**अनुवाद-** हे वह जो मेरे अपमान की घात में है और मेरी बुराई करने के अतिरिक्त तुझे और कोई काम नहीं।

می کشائی ہر دمے بر من زباں
چُوں نترسی از خدائے رازداں

**अनुवाद-** तू जो हर समय मेरे विरुद्ध अपनी ज़ुबान खोलता है अन्तर्यामी ख़ुदा से क्यों नहीं डरता।

از سر تقوی ہمی باید جدال
تاکجا دشنام ہا اے بدخصال

**अनुवाद-** संयम को दृष्टिगत रख कर युद्ध करना चाहिए। हे नीच प्रकृति इन्सान कब तक गालियां देता रहेगा।

نستی گرگِ بیابانی نہ مار
ترک کن ایں جو واز حق شرم دار

**अनुवाद-** तू जंगल का भेड़िया नहीं है, न सांप है यह आदत छोड़ और ख़ुदा से शर्म कर-

اے عجب از سیرتت اے پر غضب
از حقیقت بے خبر دور از ادب

**अनुवाद-** हे क्रोध करने वाले मनुष्य तेरे चरित्र से आश्चर्य होता है कि तू वास्तविकता से बेख़बर और सभ्यता से दूर है।

خیزو اول فہم خود راکن درست
نکتہ چیں راچشم می باید نخُست

**अनुवाद-** उठ और सब से पहले अपनी समझ को ठीक कर। मीन मेख करने वाले मनुष्य को सब से पहले अपनी आंख ठीक होनी चाहिए।

دل شود از بد زبانی ہا سیاہ
بد زباناں را در آنجانیست راہ

**अनुवाद-** गालियां देने से दिल पापी हो जाता है। गालियां देने वाले लोगों की ख़ुदा के यहां पहुँच नहीं है।

کم نشیں با زمرۂ مُستہزئین
تابیابی حصّہَ از مہتدین

**अनुवाद-** हंसी-ठट्ठा करने वालों के साथ न बैठ ताकि तू हिदायत प्राप्त लोगों में सम्मिलित हो।

روز وشب بد گفتنم کارِ توشد
لعنت و تحقیر کردارِ تو شد

**अनुवाद-** दिन-रात तेरा काम मुझे बुरा कहना है। लानत और तिरस्कार तेरा पेशा हो गया है।

لعنت آں باشد کہ از رحماں بود
لعنت نااہل و دوں آساں بود

**अनुवाद-** लानत वह होती है जो रहमान (ख़ुदा का नाम) की तरफ़ से हो। अयोग्य और नीच मनुष्य की लानत कोई वास्तविकता नहीं रखती।

گر سفیہے لعنتے بر ما کند
او نہ بر ما خویش را رُسوا کند

**अनुवाद-** यदि कोई मूर्ख हम पर लानत करे वह हम पर नहीं पड़ती बल्कि वह स्वयं अपने आप को बदनाम करता है।

ہر کہ مے دارد دلِ پرہیزگار
چوں عجب دارد زِ کارِ کردگار

**अनुवाद-** जिस व्यक्ति का दिल संयमी है वह ख़ुदा के काम पर आश्चर्य क्यों करे।

آنکہ ازیک قطرہ انسانے کند
و از دو مُشتِ تخم بستانے کند

**अनुवाद-** वह ख़ुदा जो एक बूँद से मनुष्य को पैदा कर देता है और दो मुट्ठी बीजों से एक बाग़ बना देता है।

چوں منے را گر مسیحائی کند
یا گدائے را شہنشاھی کند

**अनुवाद-** यदि वह मुझ जैसे को मसीह बना देता है या एक फ़क़ीर को शहंशाह बना देता है।

نیست از فضل و عطائے او بعید
کور باشد ہرکہ از انکار دید

**अनुवाद-** तो उसकी कृपा और उपकार से यह बात दूर नहीं। वह अंधा है जिसने इस बात को इन्कार की दृष्टि से देखा।

ہاں مشو نومید زاں عالی جناب
بندہ باش وہرچہ می خواہی بیاب

**अनुवाद-** सावधान! तू उस श्रेष्ठ दरबार से निराश न हो। बन्दा बन जा। फिर जो तू चाहता है ले ले।

قادرّاست وخالق و ربّ مجید
ہرچہ خواہد می کند عجزش کہ دید

**अनुवाद-** वह शक्तिमान, स्रष्टा और महान प्रतिपालक (रब्ब) है जो चाहता है करता है उसकी लाचारी किसने देखी है।

نطفہ را رُوئے درخشاں می دہد
سنگ را لعل بدخشاں می دہد

**अनुवाद-** एक बूँद वीर्य से चमकदार चेहरा बना देता है और पत्थर से बदख्शां का ला'ल पैदा कर देता है।

برکسے چوں مہربانی مے کند
از زمینی آسمانی مے کند

**अनुवाद-** जब किसी पर मेहरबानी करता है तो उसे ज़मीनी से आकाशीय बना देता है।

ہم چنیں برمن عطائے کردہ است
فضل ہا بے انتہائے کردہ است

**अनुवाद-** इसी प्रकार उसने मुझ पर मेहरबानी की है और असीमित कृपाएं की हैं।

مظہر انوارِ آں بے چوں شدم
در معارف از ہمہ افزوں شدم

**अनुवाद-** मैं स्वयं उस अद्वितीय हस्ती का द्योतक बन गया और वास्तविकताओं तथा मआरिफ़ में सब से बढ़ गया।

یارِ من بر من کرم دارد بسے
صد نشاں دارم اگر آید کسے

**अनुवाद-** मेरा ख़ुदा मुझ पर असीम मेहरबानी रखता है। मेरे पास सैकड़ों निशान हैं यदि कोई देखने को आए।

بشنوید اے مردگاں من زندہ ام
اے شبانِ تیرہ من تابندہ ام

**अनुवाद-** हे तिरस्कृत! सुन ले कि मै जीवित हूं। हे अँधेरी रातो! (तुम भी सुन लो) मैं प्रकाशमान हूं।

ایں دو چشم من کہ زیب ایں سرم
بیند آں یارے کہ یارے دلبرم

**अनुवाद-** मेरी ये दोनों आंखें जो मेरे सर की शोभा हैं उस यार को देखती हैं जो मेरा प्रियतम है।

ایں قدم تا عرش حق دارد گذر
وایں دو گوشم را رسد از حق خبر

**अनुवाद-** मेरे इस क़दम की सैर ख़ुदा के अर्श तक पहुंचती है और मेरे इन दोनों कानों को ख़ुदा की तरफ़ से ख़बरें मिलती हैं।

صدہزاراں نعمتم بخشیدہ اند
وایں رُخم از غیر حق پوشیدہ اند

**अनुवाद-** मुझे लाखों नेमतें प्रदान की गई हैं और मेरे इस चेहरे को ग़ैरों से छुपा दिया गया है।

می دہم فرعونیاں را ہرزماں
چوں ید بیضائے موسیٰ صد نشاں

**अनुवाद-** मैं हर समय फ़िरऔनी विशेषता रखने वाले लोगों को (यदे बैज़ा) जैसे सैकड़ों निशान दिखाता हूं।

زیں نشانہا بدر گاں کور و کر اند
صد نشاں بینند و غافل بگذرند

**अनुवाद-** दुष्प्रकृति लोग इन निशानों की तरफ़ से अंधे और बहरे हैं। सैकड़ों निशान देख कर भी परवाह नहीं करते।

دُور افتادم ز چشمانِ بشر
از مقامم کس نمے دارد خبر

**अनुवाद-** मैं लोगों की आँखों से दूर हूं किसी को मेरे मुक़ाम की ख़बर नहीं है।

درمن افتادند از نقص عقول
بخت برگردیدہ محروم از قبول

**अनुवाद-** बुद्धि की कमी के कारण उन्होंने मुझ से मुक़ाबला किया और दुर्भाग्यशाली हो कर मुझे स्वीकार करने से वंचित रह गए।

کس ز راز جان من آگاہ نیست
عقل شاں را تا در ما راہ نیست

**अनुवाद-** मेरे आन्तरिक राज़ से कोई परिचित नहीं उनकी बुद्धि की हमारे दरवाज़े तक पहुँच नहीं।

از سر حمق است جوش وجنگ شاں
واز پئے اطفاء حق آہنگ شاں

**अनुवाद-** उन का जोश और लड़ाई मूर्खता के कारण है और ख़ुदा के प्रकाश को बुझाना उन का उद्देश्य है।

اے مزوّر گر بیائی سُوئے ما
و از وفا رخت افگنی در کوئے ما

**अनुवाद-** हे धोखा खाए मनुष्य! यदि तू हमारी तरफ़ आए और हमारे पास वफ़ादार हो कर रहे।

واز سر صدق و صداقت پروری
روزگارے درحضور ما بری

**अनुवाद-** और सच्चा बन कर और सच्चाई की अभिलाषा की नीयत से कुछ समय हमारे पास रहे।

عالمے بینی ز ربّانی نشاں
سوئے رحماں خلق و عالم راکشاں

**अनुवाद-** तो तू ख़ुदाई निशानों का एक संसार देखेगा जो दुनिया को ख़ुदा की तरफ़ खींचने के लिए आते हैं।

من نہ مے خواہم کہ آزارے دہم
برسر ہر ماہ دینارے دہم

**अनुवाद-** मैं नहीं चाहता कि इस मामले में तुझे कोई कष्ट दूं बल्कि हर महीने एक अशर्फ़ी देने को तैयार हूं।

ہم چنیں یک سال می باید قیام
از من ایں عہد است و از توالتزام

**अनुवाद-** इसी प्रकार एक वर्ष तक मेरे पास रहना चाहिए मेरी तरफ से यह सकंल्प है और तेरी तरफ़ से यह पाबंदी आवश्यक है।

گر گذشت ایں سال وعدم بے نشاں
ہرچہ میگوئی بہے گو بعد زاں

**अनुवाद-** यदि मेरे वादे का यह वर्ष बिना किसी निशान के गुज़र गया तो तुझे जो कुछ कहना है उसके बाद कह।

صالحاں را ایں طریق و سنت است
راہ استعجال راہِ لعنت است

**अनुवाद-** यही नेक लोगों का तरीका है और उनकी सुन्नत है। जल्दबाज़ी का मार्ग लानत का मार्ग है।

ہر کہ روشن شد دروں از حضرتش
کیمیا باشد دمے در صحبتش

**अनुवाद-** जिस मनुष्य का अन्त:करण ख़ुदा के दरबार से रोशन हो गया उसकी सगंत में तो एक पल गुज़ारना भी कीमिया है।

ہر کہ او را ظلمتے گیرد بہ راہ
دامن پاکاں است او را عذر خواہ

**अनुवाद-** जिस व्यक्ति को अंधकार घेर लेता है उसके लिए तो पवित्र लोगों का दामन ही शफ़ी है।

آں خدا با یارِ خود یاری کند
با وفاداراں وفاداری کند

**अनुवाद-** वह ख़ुदा अपने दोस्त के साथ दोस्ती करता है और वफ़ादारों के साथ वफ़ादारी करता है।

ہر کہ عشقش در دل و جانش فتاد
ناگہاں جانے در ایمانش فتاد

**अनुवाद-** जिस के जान तथा दिल में उस का इश्क़ (प्रेम) प्रवेश कर जाता है तो उसके ईमान में तुरन्त जान पड़ जाती है।

عشق حق گردد عیاں بر رُوئے او
بُوئے او آید ز بام و کُوئے او

**अनुवाद-** ख़ुदा का प्रेम उसके चेहरे से प्रकट हो जाता है और उसकी ख़ुशबू उसके मकान और गली से आती है।

دید او باشد بحکم دید او
خود نشیند حق پئے تائید او

**अनुवाद-** उसका दर्शन करना ख़ुदा के दर्शन करने का आदेश रखता है और ख़ुदा तआला स्वयं उसकी सहायता में लग जाता है।

بس نمایاں کارہا کاندر جہاں
مے نماید بہر اکرامش عیاں

**अनुवाद-** बहुत से बड़े-बड़े काम ख़ुदा तआला उसके सम्मान के लिए इस दुनिया में दिखाता है।

صد شعاعش مے دہد چوں آفتاب
تا مگر جانے بر آید از حجاب

**अनुवाद-** सूर्य की तरह उसे प्रकाश की सैकड़ों किरणें प्रदान करता है ताकि कोई जान अंधकार के पर्दों से मुक्ति पाए।

ایں چنیں بر من کرمہا کردہ است
منکرم برخود ستمہا کردہ است

**अनुवाद-** ख़ुदा तआला ने मुझ पर ऐसी कृपाएं की हैं मेरे इन्कार करने वालों ने स्वयं अपने आप पर ज़ुल्म कर रखा है।

علمِ قرآں علم آں طیّب زباں
علم غیب از وحی خلّاقِ جہاں

**अनुवाद-** क़ुर्आन का ज्ञान, उस पवित्र भाषा का ज्ञान और ख़ुदा के इल्हाम से परोक्ष (ग़ैब) का ज्ञान।

ایں سہ ۳ علم چوں نشانہا دادہ اند
ہرسہ ہمچوں شاہداں استادہ اند

**अनुवाद-** ये तीन ज्ञान मुझे निशान के तौर पर दिए गए हैं। और तीनों बतौर गवाह मेरे समर्थन में खड़े हैं।

آدمی زادے ندارد ہیچ فن
تادر آویزد دریں میداں بمن

**अनुवाद-** कोई मनुष्य यह शक्ति नहीं रखता कि इस मैदान में मुझ से मुकाबला करे।

حجتِ رحماں بر ایشاں شد تمام
یاوہ گوئی ماند در دستِ لئام

**अनुवाद-** रहमान की तरफ़ से उन पर समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण हो गया। मूर्ख लोगों के पास केवल निरर्थक बकवास रह गया।

از کسوف وترک آں نورے کہ بود
مہر و مہ ہم پیشم آمد در سجود

**अनुवाद-** सूर्य एवं चन्द्र ग्रहण के अवसर पर अपने प्रकाश विहीन होने के कारण चन्द्रमा और सूर्य भी मेरे सामने सज्दे में गिर पड़े।

ایں نشاں برآسماں رحماں نمود
برزمیں ہم دستِ ہیبت ہا کشود

**अनुवाद-** रहमान ने ये निशान तो आकाश पर दिखाया और पृथ्वी पर भी अपना भयावह हाथ दिखाया।

ہست لطف یارِ من بر من اتم
او مرا شد من ہم از بہرش شدم

**अनुवाद-** मेरे यार की मुझ पर पूर्ण मेहरबानी है वह मेरा हो गया और मैं उसका हो गया।

دِلبرم در شد بجان و مغز و پوست
راحت جانم بیاد رُوئے اوست

**अनुवाद-** मेरा प्रियतम मेरी जान, मज्जा और त्वचा में रच गया। मेरी जान की ख़ुशी उसी के मुंह की याद है।

رازہا دارم بیارِ دلبرم
شد عیاں از من بہارِ دلبرم

**अनुवाद-** मेरे प्रियतम और मेरे बीच कई राज़ हैं और उसकी प्रतिष्ठा मेरे आस्तित्व से प्रकट हुई है।

ہرکسے دستے بہ دامانے زند
ما بہ ذیل حیّ و قیّوم و اَحد

**अनुवाद-** हर व्यक्ति किसी न किसी के दामन को पकड़ता है। परन्तु हमने हमेशा जीवित रहने वाले क़ायम रहने वाले अद्वितीय ख़ुदा के दामन को पकड़ा है।

اے دریغا قوم من نشناختند
نقد ایماں درحسدہا باختند

**अनुवाद-** अफ़सोस मेरी क़ौम ने मुझे नहीं पहचाना और ईमान की दौलत ईर्ष्या से बर्बाद कर दी।

ایں جہانِ پُر ستم کور و کر است
چشم شاں از چشم بوماں کمتر است

**अनुवाद-** यह ज़ालिम दुनिया अंधी और बहरी है उसकी आंखें उल्लुओं की आँखों से भी गई गुजरी हैं।

ذرّہ بودم مرا بنواختند
چوں خورے گشتم ز چشم انداختند

**अनुवाद-** (इसलिए कि जब) मैं एक कण था तो उन्होंने मेरा सम्मान किया, परन्तु जब मैं सूर्य बन गया तो उन्होंने मुझे अपनी नज़र से गिरा दिया।

मियां अब्दुल हक़ साहिब ग़ज़नवी ने एक विज्ञापन निकाला है जो वास्तव में मौलवी अब्दुल जब्बार और उनके भाइयों की ओर से मालूम होता है। ख़ुदा ही अधिक जानने वाला है। इस विज्ञापन में जितनी गालियां और हंसी-ठट्ठा है जो हमेशा से मूर्खों का तरीका है उसे हम ख़ुदा तआला के न्याय के सुपुर्द करके असल बातों का उत्तर देते हैं। व बिल्लाहित्तौफ़ीक

यह विज्ञापन दो रंग के प्रहारों पर आधारित है। प्रथम मियां अब्दुल हक़ ने कुछ पहले निशानों और भविष्यवाणियों को जो वास्तव में पूरी हो चुकीं या जो शीघ्र ही पूरी होने को हैं प्रस्तुत करके जन सामान्य को यह धोखा देना चाहा है कि जैसे वे पूरी नहीं हुईं। उदाहरणतया वह अपने विज्ञापन में लिखता है कि डिप्टी आथम और अहमद बेग़ होशियारपुरी और उसके दामाद वाली भविष्यवाणी पूरी नहीं हुई परन्तु हमें आश्चर्य है कि मौलवी कहला कर फिर ऐसा गन्दा झूठ बोलना इन लोगों की तबियत कैसे सहन कर लेती है। किस को मालूम नहीं कि ये दोनों भविष्यवाणियां सच्चाई की ओर लौटने और तौबः की शर्त के साथ प्रतिबंधित थीं। परन्तु अहमद बेग़ की दृष्टि

के सामने कोई भयानक नमूना मौजूद न था जिसके कारण वह शर्त से लाभ न उठा सका और भविष्यवाणी के आशय के अनुसार ठीक निर्धारित समय सीमा के अन्दर मर गया। और उसकी मौत ने सफ़ाई से भविष्यवाणी के एक भाग को पूरा करके दिखा दिया। अहमद बेग़ वह व्यक्ति था जिसकी मौत ने विरोधी मौलवियों में बड़ा मातम (शोक) पैदा किया और मुहम्मद हुसैन ने लिखा कि निस्सन्देह इस व्यक्ति को नक्षत्र-विद्या का ज्ञान है जिसकी भविष्यवाणी ऐसी सफ़ाई से पूरी हो गई। परन्तु अहमद बेग़ के दामाद और उसके माता-पिता तथा परिजनों ने जब यह भयानक नमूना अपनी आँखों से देख लिया तो ऐसा भय छा गया कि मरने से पहले ही मुर्दा समझ लिया गया। इसलिए जैसा कि मनुष्य के स्वभाव में सम्मिलित है इसे देखकर उनके दिलों में ख़ुदा की ओर लौटने का बहुत ध्यान पैदा हुआ और कुछ ने मुझे पत्र लिखे कि ग़लती माफ़ करें। उनके घरों में दिन-रात मातम आरम्भ हुआ और दान-पुण्य तथा नमाज़ रोज़े में लग गए और उस गांव के लोग स्त्रियों का रोना-विलाप करना सुनते रहे। इस प्रकार वे समस्त स्त्री-पुरुष भय से भर गए और यूनुस की क़ौम की तरह उस अज़ाब को देखकर तौब: और दान-पुण्य में व्यस्त हो गए। फिर सोच लो कि ऐसी हालत में उनके साथ ख़ुदा तआला का क्या मामला होना चाहिए था। ऐसा ही डिप्टी आथम भी अहमद बेग वाले निशान को सुन चुका था और अख़बारों तथा विज्ञापनों द्वारा यह निशान लाखों लोगों में प्रसिद्ध हो चुका था। इसलिए उसने भी शर्त के अनुसार भविष्यवाणी सुनने के पश्चात् भय और आशंका के लक्षण प्रकट किए। इसलिए भविष्यवाणी की शर्त के अनुसार ख़ुदा ने देर कर दी, क्योंकि शर्त

ख़ुदा का वादा था और वह अपने वादे के विरुद्ध नहीं करता। यह समस्त संसार का माना हुआ मामला और मुसलमानों, ईसाइयों तथा यहूदियों की सर्वसहमत आस्था है कि अज़ाब की भविष्यवाणी तौब:, क्षमायाचना और भय की शर्त के बिना भी टल सकती है। जैसा कि यूनुस नबी की चालीस दिन की भविष्यवाणी जिसके साथ कोई शर्त न थी टल गई और नेनवा के रहने वाले जो एक लाख से भी अधिक थे उनमें से एक बच्चा भी न मरा और यूनुस नबी इस विचार और शर्म से कि मेरी भविष्यवाणी झूठी निकली अपने देश से भाग गया। अब सोचो कि क्या यह ईमानदारी है कि इस आरोप को करते समय इस किस्से को याद नहीं करते उस स्थान पर हदीस के शब्द ये हैं- कि

قَالَ لَنْ يَّرْجِعَ اِلَيْهِمْ كَذَّابًا

यूनुस ने कहा कि अब मैं झूठा कहला कर फिर उस क़ौम की ओर हरगिज़ नहीं जाऊँगा। यदि हदीस पर विश्वास है तो "दुर्रे मन्सूर" में इस अवसर की व्याख्या में हदीसें देख लो, और यदि ईसाइयों की बाइबल पर विश्वास है तो यूज़ नबी की किताब को देखो। आख़िर किसी समय तो शर्म चाहिए। बेहयाई (निर्लज्जता) और ईमान इकट्ठे नहीं हो सकते। इस अन्याय और अत्याचार का ख़ुदा तआला के सामने क्या उत्तर दोगे कि तुम लोगों ने सौ भविष्यवाणी पूरी होते देखी, उस से कुछ लाभ न उठाया और एक-दो भविष्यवाणियां जिनको तुम लोग अपनी ही मूर्खता से समझ न सके जो शर्तों से प्रतिबंधित थीं उन पर शोर मचा दिया। परन्तु यह शोर मुझ से और मेरी भविष्यवाणियों से विशेष नहीं। भला किसी ऐसे नबी का तो नाम लो जिसकी कुछ भविष्यवाणियों के बारे में मूर्खों ने शोर न मचाया हो कि वे पूरी नहीं

हुईं। मैं अभी लिख चुका हूं कि अज़ाब की भविष्यवाणियों के बारे में ख़ुदा तआला की यही सुन्नत (नियम) है कि भविष्यवाणी में चाहे शर्त हो या न हो, गिड़गिड़ाने, तौब: और भय के कारण टाल देता है। इस प्रकार केवल यूनुस का क़िस्सा ही गवाह नहीं बल्कि क़ुर्आन और हदीस तथा समस्त नबियों की किताबों से यह बात सिद्ध होती है कि ख़ुदा तआला जब किसी को अज़ाब देने का इरादा करता है। यदि अपने इस इरादे पर किसी नबी, या रसूल या मुहद्दिस को सूचना दे दे तो इस स्थिति में वही इरादा भविष्यवाणी कहलाता है। तो जबकि माना गया है कि वह इरादा दुआ, दान और पुण्य से टल सकता है तो फिर क्या कारण है कि केवल इस कारण से कि उस इरादे की किसी मुल्हम को सूचना भी दी गई है टल नहीं सकता। क्या वह इस सूचना देने के बाद कुछ और चीज़ बन जाता है या ख़ुदा को सूचना देने के बाद दुआ, तौब: और दान के द्वारा उसको टाल देना अरुचिकर मालूम होने लगता है और सूचना देने से पूर्व उसको टालना अरुचिकर मालूम नहीं होता। अफ़सोस कि मूर्ख लोग ख़ुदा तआला के वादे और उसकी वईद (अज़ाब की भविष्यवाणी) में कुछ अन्तर नहीं समझते। वईद में वास्तव में कोई वादा नहीं होता, केवल इतना होता है कि ख़ुदा तआला अपनी अत्यन्त पवित्रता के कारण चाहता है कि अपराधी व्यक्ति को दण्ड दे और प्राय: इस मांग के बारे में अपने मुल्हमों को सूचना भी दे देता है। फिर जब अपराधी व्यक्ति तौब:, क्षमायाचना और गिड़गिड़ा कर उस मांग का हक़ पूरा कर देता है तो ख़ुदा की दया की मांग प्रकोप की मांग पर आगे निकल जाती है और उस प्रकोप को अपने अन्दर छुपा देती और पर्दा डाल देती है।

यही अर्थ है इस आयत के कि

عَذَابِیۡۤ اُصِیۡبُ بِہٖ مَنۡ اَشَآءُ ۚ وَ رَحۡمَتِیۡ وَسِعَتۡ کُلَّ شَیۡءٍ ؕ

(अल आराफ़-157)

अर्थात رحمتی سبقت غضبی यदि यह सिद्धान्त न माना जाए तो समस्त शरीअतें ग़लत हो जाती हैं। तो हमारे विरोधियों पर कितना अफ़सोस है कि वे मुझ से वैर के लिए इस्लामी शरीअत पर कुल्हाड़ी चलाते हैं। वे जब सच्ची बात सुनते हैं तो संयम से काम नहीं लेते बल्कि इस चिन्ता में लग जाते हैं कि किसी न किसी प्रकार इस का खण्डन करना चाहिए। न मालूम वे सच्ची मारिफ़तों का खण्डन करते-करते कहां तक पहुँचेंगे। यह जो लिखा है कि वलियों का मुकाबला करने से ईमान जाने का ख़तरा है। वह ख़तरा इस कारण से भी पैदा होता है कि सिद्दीकों और वलियों की बातें सच्चाई के झरने से निकलती हैं तथा ईमान का स्तम्भ होती हैं परन्तु उनका विरोधी अपना यह सिद्धान्त निर्धारित कर लेता है कि उन की प्रत्येक बात का खण्डन करता जाए और किसी को स्वीकार न करे। क्योंकि ईर्ष्या और शत्रुता बुरी विपत्ति है। इसलिए एक दिन किसी ऐसे मामले में विरोध कर बैठता है जिससे ईमान तुरन्त जाता रहता है। उदाहरणतया जैसा कि यह मामला कि ख़ुदा का अज़ाब का इरादा, चाहे उस इरादे को किसी मुल्हम पर प्रकट किया हो या न किया हो दुआ, दान, तौबः और इस्तिग़फ़ार (क्षमा-याचना) से टल सकता है। कितना सच्चा, इस्लामी शरीअत का सार और समस्त नबियों का सर्व सम्मत मामला है। परन्तु क्या सम्भव है कि एक नफ़्सानी (अहंकारी) आदमी जो मुझ से विरोध रखता है वह इस मारिफ़त के रहस्य को मेरे मुंह

से सुनकर स्वीकार कर लेगा? हरगिज़ नहीं। वह तो सुनते ही इस चिन्ता में लग जाएगा कि उसका किसी प्रकार खण्डन करना चाहिए ताकि किसी भविष्यवाणी को झुठलाने का यह माध्यम ठहर जाए। यदि उस व्यक्ति को ख़ुदा का भय होता तो लोगों की ओर न देखता और दिखावे से मतलब न रखता, बल्कि स्वयं को ख़ुदा के सामने खड़ा समझता और मुंह पर वही बात लाता जो संयम की पाबंदी के साथ वर्णन करने के योग्य होती और निन्दा सहन करता तथा लोगों की लानत सुनता परन्तु सच्चाई की गवाही दे देता। परन्तु जब दुर्भाग्य विजयी जो जाए तो फिर सौभाग्य कहां।

ولٰکن اذا غلبت الشقوۃ فاین السعادۃ۔

मियां अब्दुल हक़ का दूसरा प्रहार यह है कि वह प्रस्ताव जो मैंने ख़ुदा तआला के इल्हाम से समझाने के अन्तिम प्रयास के तौर पर प्रस्तुत किया था जिस में इससे पूर्व भी विज्ञापन द्वारा प्रकाशित कर चुका था अर्थात् रोगियों के ठीक हो जाने के द्वारा दुआ के स्वीकार होने का मुक़ाबला। इस प्रस्ताव को मियां अब्दुल हक़ स्वीकार नहीं करते और यह बहाना करते हैं कि भला हिन्दुस्तान और पंजाब के समस्त शेख़ और उलेमा किस प्रकार एकत्र हों तथा उनके ख़र्चों का अभिभावक कौन हो। परन्तु स्पष्ट है कि यह कैसा बेकार और ल्च्चर बहाना है। जिस हालत में ये लोग क़ौम का हज़ारों रुपया खाते हैं तो ऐसे आवश्यक कार्य के लिए दो-चार रुपए तक किराया खर्च करना क्या कठिन है। यह तो हमने स्वीकार किया कि लोग धर्म के लिए अपने ऊपर कोई कष्ट पसन्द नहीं कर सकते परन्तु ऐसे आवश्यक कार्य के लिए कि हज़ारों लोग उनके पंजे से निकलते जाते हैं और

उनके विचार के अनुसार वे काफ़िर बनते जाते हैं। कुछ दिरहम किराए के लिए जेब से निकालना कोई बड़ा कष्ट नहीं और यदि कोई व्यक्ति ऐसा ही

(आले इमरान-113) ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ

का चरितार्थ है तो उसको अब्दुल हक़ की वकालत की आवश्यकता नहीं। मैं दो सौ कोस तक के किराए का स्वयं ज़िम्मेदार हो सकता हूं। उसे किसी से क़र्ज़ लेकर लाहौर पहुँच जाना चाहिए और अपने शहर के किसी रईस का सर्टीफ़िकेट मुझे दिखा दे कि वास्तव में उस मौलवी या पीरज़ादे पर आजीविका की बहुत कठिनाई है, कर्ज़ा लेकर लाहौर में पहुंचा है। तो मैं वादा करता हूं कि वह किराया में दे दूँगा, बशर्ते कि कोई नाम का मौलवी या पीरज़ादा न हो, प्रसिद्ध हो। जैसे नज़ीर हुसैन देहलवी इत्यादि। और यदि प्रस्ताव स्वीकार नहीं तो केवल ज़िला लाहौर, अमृतसर, गुरदासपुर और लुधियाना के मौलवी और शेख़ एकत्र हो जाएँ उनमें से भी उपरोक्त शर्तों के अनुसार प्रत्येक संकट ग्रस्त व्यक्ति का किराया में दे दूँगा।

وان لم تفعلوا ولن تفعلوا فاعلموا انكم سترجعون الى
الله ثم تُسْئَلُوْنَ

फिर मियां अब्दुल हक़ ने यह कार्रवाई की है कि यह बहाना करके जिसका अभी हमने उत्तर दिया है अपनी तरफ से हंसी-ठट्ठा करके एक निशान मांगा है और इस ठट्ठे में पहले इन्कारियों से कम नहीं रहे। क्योंकि अरब के लोगों ने इस प्रकार के हंसी ठट्ठे से कभी निशान नहीं मांगा कि अमुक सहाबा की टांग कमज़ोर है वह ठीक हो जाए या उसकी किसी आंख में दृष्टि नहीं, वह ठीक

हो जाए। हाँ मक्का के लोगों ने यह निशान मांगा था कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का घर सोने का हो जाए और उसके चारों ओर नहरें भी जारी हों और यह कि आप उन को देखते हुए आकाश पर चढ़ जाएँ और देखते-देखते आकाश पर से उतर आएं और ख़ुदा की किताब साथ लाएं और वे उसे हाथ में लेकर टटोल भी लें तब ईमान लाएंगे। इस निवेदन में यद्यपि मूर्खता थी परन्तु मियां अब्दुल हक़ की तरह कष्ट देने वाली शरारत न थी। इसी प्रकार हज़रत ईसा अलैहिस्स्लाम से लोगों ने निशान मांगे थे। परन्तु स्पष्ट है कि उन निवेदन करने वाले लोगों को उनके मुंह मांगे निशान नहीं दिए गए थे बल्कि डाँट-डपट द्वारा उत्तर दिया गया था। पवित्र क़ुर्आन में स्वयं लोगों द्वारा मांगे गए निशान चाहने वालों को यह उत्तर दिया गया था-

قُلْ سُبْحَانَ رَبِّیْ هَلْ کُنْتُ اِلَّا بَشَرًا رَّسُوْلًا ۝ (बनी इस्राईल-94)

अर्थात् ख़ुदा तआला की शान इस दोष से पवित्र है कि उसके किसी रसूल, नबी या मुल्हम को यह शक्ति प्राप्त हो कि जो ख़ुदा होने से सम्बंधित विलक्षण काम हैं उनको वह अपनी क़ुदरत (शक्ति) से दिखाए। फ़रमाया कि उन को कह दे कि मैं तो केवल मनुष्यों में से एक रसूल हूं अपनी ओर से किसी काम को करने का अधिकार नहीं रखता। केवल ख़ुदा के आदेश का अनुकरण करता हूं। फिर मुझ से यह निवेदन करना कि यह निशान दिखा और यह न दिखा सर्वथा मूर्खता है। जो कुछ ख़ुदा ने कहा वही दिखा सकता हूं न कि और कुछ। इंजील में स्वयं निर्मित निशान मांगने वालों को हज़रत मसीह स्पष्ट शब्दों में संबोधित करके कहते हैं कि इस युग के हरामकार लोग

मुझ से निशान मांगते हैं उनको यूनुस नबी के निशान के अतिरिक्त कोई निशान नहीं दिखलाया जाएगा। अर्थात निशान यह होगा कि शत्रुओं के अत्यधिक प्रयासों के बावजूद जो मुझे सूली पर मारना चाहते हैं मैं यूनुस नबी की तरह कब्र के पेट में जो मछली के समान है जीवित ही दाख़िल हूँगा और जीवित ही निकलूंगा। फिर यूनुस की तरह मुक्ति पाकर किसी दूसरे देश की ओर जाऊँगा। यह उस घटना की ओर संकेत था जिसकी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सूचना दी है, जैसा कि उस हदीस से सिद्ध है जो कन्ज़ुल उम्माल में है। अर्थात् यह कि ईसा अलैहिस्सलाम सलीब से मुक्ति पाकर एक ठन्डे देश की ओर भाग गए थे। अर्थात् कश्मीर, जिसके शहर श्रीनगर में उनकी क़ब्र मौजूद है। तो जब हज़रत मसीह से उनके दुश्मनों ने निशान मांगा और मियां अब्दुल हक़ की तरह कुछ अपने बनाए हुए निशान प्रस्तुत किए कि हमें ये दिखाओ तो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का वही उत्तर था जो अभी हम ने लिखा है। इस से मालूम होता है कि मियाँ अब्दुल हक़ का ऐसे अपने बनाए हुए निशान के मांगने में कुछ दोष नहीं है, बल्कि आयत-

تَشَابَهَتْ قُلُوبُهُمْ (अलबक़रह-119)

के अनुसार उनकी तबीयत ही उन अभागे काफ़िरों के समान बनी हुई है जो ख़ुदा तआला के निशानों को स्वीकार नहीं करते थे तथा अपनी और से गढ़ कर निवेदन करते थे कि ऐसे-ऐसे निशान दिखाओ। परन्तु यदि अफ़सोस है तो केवल यह है कि केवल उन लोगों ने मौलवी कहला कर हंसी-ठट्ठा अपना आचरण बना लिया है। जो व्यक्ति अब्दुल हक़ के विज्ञापन को ध्यानपूर्वक पढ़ेगा उसे स्वीकार

करना पड़ेगा कि उन्होंने बिरादरम मौलवी अब्दुल करीम साहिब का शरारत एवं असभ्यतापूर्वक वर्णन करके उनकी टांग का ठीक होना या आंख की दृष्टि के बारे में जो निशान मांगा है यह एक बदमाशों के ढंग पर ठट्ठा किया है जो किसी संयमी और भाग्यशाली व्यक्ति का काम नहीं है। गन्दे दिल से गन्दी बातें निकलती हैं और पवित्र दिल से पवित्र बातें। मनुष्य अपनी बातों से ऐसा ही पहचाना जाता है जैसा कि वृक्ष अपने फलों से। जिस हालत में अल्लाह तआला ने पवित्र क़ुर्आन में स्पष्ट तौर पर फ़रमा दिया है कि-

وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْأَلْقَابِ (अलहुजुरात-12)

अर्थात् लोगों के ऐसे नाम मत रखो जो उनको बुरे मालूम हों तो फिर इस आयत के विरुद्ध करना किन लोगों का काम है। परन्तु अब तो न हम अब्दुल हक़ पर अफ़सोस करते हैं न उसके दूसरे मित्रों पर। क्योंकि इन लोगों का अन्याय और ज़ुल्म, झूठ बोलना तथा झूठ गढ़ना सीमा से गुज़र गया है। इसी विज्ञापन को पढ़ कर देख लो कि कितना झूठ से काम लिया है। क्या किसी स्थान पर भी ख़ुदा तआला से शर्म की है। अत: हम बतौर नमूना उसका कथन और मेरे कथन की पद्धति पर इस ज़ालिम मनुष्य के झूठों का भण्डार नीचे लिख देते हैं जो इस विज्ञापन में उसने प्रयोग किए हैं और वे ये हैं:-

**उसका कथन:-** मिर्ज़ा अनेकों बार विभिन्न स्थानों के मुबाहसों में शर्मिन्दा और निरुत्तर हुआ और प्रत्येक सभा में हताश, निराश और असफल रहा।

**मेरा कथन:-** क्यों मियां अब्दुल हक़ क्या तुमने यह सच बोला है? क्या अब भी हम झूठों पर ख़ुदा की लानत न कहें। शाबाश! तुम

ने अब्दुल्लाह गज़नवी का अच्छा नमूना व्यक्त किया, शिष्य हों तो ऐसे हों। भला यदि सच्चे हो तो उन सभाओं और मज्लिसों की थोड़ी व्याख्या तो करो जिन में मैं शर्मिन्दा हुआ। इतना झूठ क्यों बोलते हो? क्या मरना नहीं है? भला उन मुबाहसों की इबारतें तो लिखो जिन में तुम या तुम्हारा कोई और भाई विजयी रहा अन्यथा न मैं बल्कि आकाश भी यही कह रहा है कि झूठों पर ख़ुदा की लानत। मेरी ओर से इस से अधिक समझाने का प्रयास क्या हो सकता था कि मैंने क़ुर्आन से सिद्ध कर दिया कि हज़रत मसीह मृत्यु पा चुके हैं। हदीस से सिद्ध कर दिया कि हज़रत मसीह मृत्यु पा चुके और उनकी आयु एक सौ पच्चीस वर्ष की थी। मेराज की हदीस ने यह सिद्ध कर दिया कि वह मुर्दों में जा मिले और हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दूसरे आकाश पर उन्हें हज़रत यह्या के पास देखा। क्या अब भी उनके मरने में कसर बाकी रह गई है। समस्त सहाबा का उनकी मौत पर इज्मा (सर्व सहमति) हो गया और यदि इज्मा नहीं हुआ था तो थोड़ा वर्णन तो करो कि जब हज़रत उमर के ग़लत विचार पर कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु नहीं हुई और फिर दोबारा संसार में आएँगे। हज़रत अबू बक्र ने यह आयत प्रस्तुत की कि-

وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُوْلٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ

(आले इमरान-145)

तो हज़रत अबू बक्र ने क्या समझ कर यह आयत प्रस्तुत की थी और क्या सिद्ध करना चाहते थे। जो यथास्थान भी था और सहाबा ने उसके क्या मायने समझे थे तथा क्यों विरोध नहीं किया था और

क्यों उस जगह लिखा है कि जब यह आयत सहाबा ने सुनी तो अपने विचारों से लौट आए। इसी प्रकार मैंने हदीसों से सिद्ध कर दिया है कि आने वाला मसीह मौऊद इसी उम्मत में से होगा और उसके प्रकट होने का यही युग है। जैसा कि हदीस يَكۡسِرُ الصَّلِيۡبَ से समझा जाता है। फिर आंखें खोलो और देखो कि मेरी ही दावत (बुलाने) के समय में आकाश पर रमज़ान में चन्द्रमा और सूर्य ग्रहण बिलकुल हदीस के अनुसार हुआ तथा मेरे हाथ पर सौ के लगभग निशान प्रकट हुए, जिन के लाखों लोग गवाह हैं जिन का विवरण पुस्तक "तिरयाक़ुल क़ुलूब" में दर्ज है। कोई तरीका शेष नहीं रहा जिस के द्वारा मैंने समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण नहीं किया। पुस्तकीय तौर पर मैंने समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण किया, बौद्धिक तौर पर मैं ने समझाने के प्रयास को पूर्ण किया। आकाशीय निशानों के साथ मैंने समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण किया। अब यदि कुछ शर्म है तो स्वयं सोच लो कि कौन शर्मिन्दा, हताश, निराश और असफल रहा। फिर मैंने केवल इसी पर समाप्त नहीं किया, अनेकों बार विज्ञापन दिए कि यदि आप लोगों में कुछ सच्चाई है तो मेरे मुकाबले पर आओ, क़ुर्आन से दिखाओ या हदीस से दिखाओ कहां लिखा है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पार्थिव शरीर से साथ जीवित आकाश पर चले गए थे और फिर जीवित पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर से उतरेंगे? मैं तो अब भी मानने के लिए तैयार हूं यदि आयत

فَلَمَّا تَوَفَّيۡتَنِيۡ (अल माइद:-118)

के मायने मारने और मृत्यु देने के अतिरिक्त किसी हदीस से कुछ और सिद्ध कर सको या किसी आयत या हदीस से हज़रत ईसा

अलैहिस्सलाम का पार्थिव शरीर के साथ आसमान पर चढ़ना या पार्थिव शरीर के साठ आसमान से उतरना प्रमाणित कर सको या यदि ग़ैब की ख़बरों में जो ख़ुदा तआला से मुझ पर प्रकट होती हैं मेरा मुकाबला कर सको या दुआ के स्वीकार होने में मेरा मुकाबला कर सको या अरबी भाषा के लेख में मेरा मुकाबला कर सको या और आकाशीय निशानों में जो मुझे दिए गए है मेरा मुकाबला कर सको तो मैं झूठा हूं। आप लोग तो इन प्रश्नों के समय मुर्दे के समान हो गए हैं। यही कारण तो है कि आप लोगों को छोड़कर हज़ारों नेक लोग और प्रकाण्ड विद्वान इस जमाअत में प्रवेश करते जाते हैं। हे प्रियजन! ये बदमाशों जैसी व्यर्थ बातें कुछ काम नहीं दे सकतीं। क्या सत्याभिलाषी ऐसी व्यर्थ बातों से रुक सकते हैं? यह ग़ज़नी नहीं है यह पंजाब है जिसमें ख़ुदा के फ़ज़्ल (कृपा) से दिन-प्रतिदिन लोग होशियार और प्रतिभाशाली होते जाते हैं। मैंने देखा है कि इन्हीं बदमाशों जैसे झूठों के कारण बुद्धिमान लोग आप लोगों से श्रद्धाविहीन होते जाते हैं यहां तक कि अब यद्यपि विशेष लोग विद्वान, प्रतिष्ठित और धनाढ्य लगभग दस हज़ार हमारी जमाअत में मौजूद हैं परन्तु सामान्य संख्या तीस हज़ार से भी अधिक है। इसका क्या कारण है, यही तो है कि आप लोग केवल हंसी-ठट्ठे और गालियों से काम निकालते हैं कोई सीधे मार्ग पर चलने का पहलू ग्रहण नहीं करते। सीधी बात थी कि आप लोग मुल्हम कहलाते हैं दुआ के स्वीकार होने का भी दावा है। कुछ भविष्यवाणियां जो दुआ की स्वीकारिता पर आधारित हों विज्ञापन द्वारा प्रकाशित कर दें और इस ओर से मैं भी प्रकाशित कर दूँ। एक वर्ष से अधिक समय-सीमा न हो। फिर यदि आप लोगों की

भविष्यवाणियां सच्ची निकलीं तो एक पल में मेरी जमाअत के हज़ारों लोग आप के साथ सम्मिलित हो जाएँगे और झूठे का मुंह काला हो जाएगा। क्या आप इस निवेदन को स्वीकार कर लेंगे? संभव नहीं। तो यही कारण है कि सत्य के अभिलाषी आप लोगों से विमुख होते जाते हैं। केवल गालियों तथा बिना सबूत के झूठों से कौन मानेगा। अब भी मैंने आप लोगों पर दया करके एक विज्ञापन प्रकाशित किया है और एक विज्ञापन मेरी जमाअत की ओर से प्रकाशित हुआ है। परन्तु क्या संभव है कि आप लोग इस फैसले के लिए किसी सभा में उपस्थित हो सकेंगे। आप लोगों की नीयत अच्छी नहीं। मुंह से गालियां देना, तिरस्कार करना, काफ़िर और दज्जाल कहना, लानत भेजना, झूठ बोलना और झूठी विजय की अभिव्यक्ति करना। क्या इस से कोई विजय प्राप्त हो सकती है बल्कि हमेशा नबी और ईमानदार उपद्रवी लोगों से ऐसे ही शब्द सुनते रहे हैं। यदि ख़ुदा पर भरोसा है कि वह तुम्हारे साथ है तो उसकी ओर से कोई भविष्यवाणी प्रकाशित करो और मुकाबले पर हम से देख लो अन्यथा मुर्दे की तरह पड़े रहो तथा समय की प्रतीक्षा करो। यदि केवल गालियां देनी हैं तो मैं आपका मुंह बन्द नहीं कर सकता। न हज़रत मूसा ऐसी व्यर्थ बातों का मुंह बन्द कर सके, न हज़रत ईसा बन्द कर सके। और न हमारे सय्यिद-व-मौला हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बन्द कर सके। परन्तु आप लोगों में यदि कोई बुद्धिमान हो तो उसे सोचना चाहिए कि मेरी दावत को स्वीकार करने के लिए मुसलमानों में कितनी जोश से भरी हरकतें हो रही हैं। पेशावर से लेकर रावलपिण्डी, जेहलम, गुजरात, सियालकोट, गुजरांवाला, वज़ीराबाद, अमृतसर, लाहौर, जालंधर,

लुधियाना, अंबाला, पटियाला, देहली, इलाहाबाद, बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, हैदराबाद दकन अत: कहां तक वर्णन करें। पंजाब और हिन्दुस्तान के समस्त शहरों तथा देहात को देखो, कम ही ऐसा कोई शहर होगा जो इस जमाअत के किसी सदस्य से रिक्त होगा। अब यदि मुसलमानों की सच्ची हमदर्दी है तो केवल ये बदमाशों वाली बातें पर्याप्त नहीं हैं कि मिर्ज़ा बहुत बार निरुत्तर हो चुका है तथा हताश, निराश और असफल रहा है। अब ऐसे झूठ से तो परिचित लोगों को मुर्दार से अधिक दुर्गन्ध आती है और कोई भी इसे पसन्द नहीं करेगा। यों तो हिन्दू और चूहड़े, चमार और तुच्छ से तुच्छ लोग बहुत बार कह देते हैं कि हमने मुसलमानों से धर्म के संबंध में वार्तालाप करके निरुत्तर कर दिया और वे हमारी हर सभा में निरुत्तर, हताश, निराश तथा असफल रहे। परन्तु शालीन मनुष्य को ऐसे अपवित्र झूठ से घृणा होनी चाहिए। हे प्रिय! यदि ईमान और मुसलमानों की हमदर्दी का लेशमात्र भाग भी दिल में मौजूद है तो इन व्यर्थ बातों का अब यह समय नहीं है। अब वास्तविक तौर पर कोई मुकाबला करके दिखाना चाहिए ताकि हर झूठे का मुंह काला हो जाए।

**उसका कथन-** मुबाहल: में दर्शकों के सामने यथायोग्य बदनाम और अपमानित होकर बात करने योग्य तथा प्रतिष्ठित उलेमा और आदरणीय सूफ़ियों को उत्तर देने योग्य नहीं रहा।

**मेरा कथन-** अफ़सोस कि मुबाहल: की चर्चा करके और इतना नफ़रत करने योग्य झूठ बोलकर तुम ने और भी अपनी बदनामी तथा निन्दा कराई। मैं नहीं समझ सकता कि आप लोगों की शर्म कहां गई। और संयम तथा सच बोलने से इतनी शत्रुता क्यों हो गई। सोचकर देख लो कि जितना तुम पर और तुम्हारी जमाअत पर पतन है वह मुबाहल:

के दिन के बाद ही आरंभ हुई है। यह तो मेरी सच्चाई का बड़ा निशान था जिस से आपने अपने दुर्भाग्य से तनिक लाभ नहीं उठाया। न मालूम आप लोग किस गुफ़ा के अन्दर बैठे हो कि युग की हालतों की कुछ भी ख़बर नहीं। हज़ारों लोग बोल उठे हैं और हज़ारों रूहें महसूस कर गई है कि हमारे सौभाग्य एवं उन्नति और तुम्हारी दुर्दशा एवं पतन का दिन मुबाहल: का दिन ही था। एक छोटा सा उदाहरण देख लो कि मुबाहल: समाप्त ही हुआ था और अभी तुम और हम दोनों उसी मैदान में मौजूद थे और समस्त जमावड़ा मौजूद था। ख़ुदा तआला ने मेरा सम्मान उस जमावड़े पर प्रकट करने के लिए एक त्वरित अपमान एवं बदनामी तुम्हें दी। अर्थात् तुरन्त एक गवाह तुम्हारी जमाअत में से खड़ा कर दिया। वह कौन था, मुन्शी मुहम्मद याक़ूब जो हाफ़िज़ मुहम्मद यूसुफ़ का भाई है। उसने क़सम खाई और रो-रो कर मुझे सम्बोधित करके वर्णन किया कि मैं गवाही देता हूं कि तुम सच्चे हो। क्योंकि मैंने मौलवी अब्दुल्लाह ग़ज़नवी से सुना है कि स्वप्न की ताबीर के अवसर पर उन्होंने आप का सत्यापन किया और कहा कि एक नूर आसमान से उतरा है और वह मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी है। अब देखो कि तुम अभी मुबाहल: के स्थान से अलग नहीं हुए थे कि ख़ुदा ने तुम्हें अपमानित कर दिया और जिस इन्सान की उस्तादी का तुम गर्व करते हो उसी ने गवाही दे दी कि तुम झूठे और ग़ुलाम अहमद क़ादियानी सच्चा है। अब इस से अधिक मुबाहल: का त्वरित प्रभाव क्या होगा कि मेरे लिए ख़ुदा का आदर और सम्मान उसी समय प्रकट हो गया और उसी समय मेरी सच्चाई की गवाही मिल गई और गवाही भी तुम्हारे उस उस्ताद की अर्थात् अब्दुल्लाह ग़ज़नवी की कि यदि उसकी बात न

मानो तो आक़ कहलाओ, क्योंकि तुम्हारी सब प्रतिष्ठा उसी के कारण है। यदि उसको तुमने झूठा समझा तो फिर तुम अयोग्य शिष्य हो। तो ख़ुदा का यह एक निशान था कि मुबाहल: होते ही उसी मैदान में, उसी समय, उसी पल ख़ुदा ने तुम्हें तुम्हारे ही उस्ताद की गवाही से, तुम्हारी ही जमाअत के आदमी के द्वारा अपमानित और बदनाम कर दिया तथा असफलता प्रकट कर दी। फिर मुबाहल: के बाद मेरे सम्मान का एक और निशान पैदा हुआ जिस के लाखों लोग गवाह हैं और वह यह कि हमारे सिलसिले के लिए मुझे वे आर्थिक सफलताएं मिलीं कि यदि मैं चाहता तो मैं उस से ग़ज़नी का एक बड़ा भाग खरीद सकता। अत: इस पर सरकारी डाकखाने के वे रजिस्टर गवाह हैं जिनमें मनी आर्डर दर्ज हुआ करते हैं। परन्तु क्या तुम्हें इसके बाद कोई दो आने का मनी आर्डर भी आया? यदि आया तो उसका सबूत दो। अब प्रश्न यह है कि यह हज़ारों रुपया जो मुबाहल: के बाद मुझे भेजा गया जो तीस हज़ार रुपए से कम न था। क्या इस बात पर प्रमाण नहीं है कि मुसलमानों ने मुझे सम्मान एवं महानता की दृष्टि से देखा और मुझे प्रिय रख कर मुझ पर अपने धन न्योछावर किए। यह एक महान निशान है जिससे इन्कार करना सूर्य पर थूकना है। फिर मुबाहल: के प्रभाव का निशान यह है कि यह तीस हज़ार लोगों की जमाअत जो अब मेरे साथ है यह मुबाहल: के बाद ही मुझ को मिली। आथम का मृत्यु पाकर हमेशा के लिए इस्लामी विरोध को समाप्त करके संसार से कूच कर जाना मुबाहल: के बाद ही भविष्यवाणी के अनुसार ही प्रकटन में आया। भविष्यवाणी का आशय यह था कि जो हम दोनों में से झूठा धर्म रखता है वह पहले मरेगा। अत: आथम ने मुझ से पहले मृत्यु पाकर मेरे सच्चाई पर मुहर लगा

दी। तत्पश्चात् लेखराम के क़त्ल का वह निशान प्रकट हुआ जिस पर लगभग तीन हज़ार मुसलमान और हिन्दुओं ने एक महज़रनामा* जो हमारी ओर से तैयार हुआ था। यह गवाही अपनी कलम से अंकित कर दी कि यह भविष्यवाणी बड़ी ही सफ़ाई से प्रकटन में आई। इस साक्ष्यों एवं मुहरों द्वारा सत्यापित पेपर पर सय्यिद फ़तह अली शाह साहिब डिप्टी कलक्टर नहर के हस्ताक्षर हैं जो विरोधी जमाअत का व्यक्ति होकर सत्यापन करता है। यह निश्चित बात है कि तीस हज़ार के लगभग लोग इस भविष्यवाणी को देखकर ईमान लाए। अन्यथा हमारी जमाअत मुबाहल: से पहले तीन सौ से अधिक न थी। फिर इसके बाद ख़ुदा तआला के निशानों की इतनी अधिक वर्षा हुई कि सौ से अधिक निशान प्रकट हुए जिन के लाखों लोग गवाह हैं। बड़े-बड़े अमीर लोग एवं व्यापारी इस जमाअत में सम्मिलित हुए और एक संसार श्रद्धा एवं विश्वास के साथ मेरी ओर दौड़ा और पृथ्वी पर एक महान स्वीकारिता फैल गई। क्या इसमें तुम्हारा अपमान न था। मनुष्य दूर बैठा हुआ अन्धे के आदेश में होता है। यदि एक-दो सप्ताह क़ादियान में आकर देखो कि कैसे हज़ारों कोस से हर ओर से लोग आ रहे हैं और कैसे हज़ारों रुपया मेरे क़दमों पर डाल रहे हैं और कैसे प्रत्येक देश से बहुमूल्य उपहार और भेंटें तथा फल चले आते हैं और कैसे सैकड़ों लोगों के लिए एक विशाल लंगरखाना तैयार है और कैसे हमारी जामिअ मस्जिद में सैकड़ों लोग जो बैअत में शामिल हैं जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ते हैं, और कैसे असंख्य दर्शन करने वाले लोग कदमों पर गिरे जाते हैं तो संभवत: यह दृश्य

* **महज़रनामा** - साक्ष्यों एवं मुहरों द्वारा सत्यापित पेपर (अनुवादक)

आपके लिए शोक की अधिकता से अचानक मौत का कारण होगा। अब तनिक इन्साफ से सोचो कि मुबाहल: के बाद कौन अपमानित तथा रुसवा हुआ और किस ने सम्मान पाया यदि तुम्हें पता होता कि मुबाहल: से पूर्व मेरी जमाअत क्या थी और स्वीकारिता कितनी थी और फिर मुबाहल: के बाद पृथ्वी पर कितनी स्वीकारिता फैल गई और कितने समूह के समूह लोग इस मुबारक सिलसिले में सम्मिलित हुए। तो विश्वास था कि तुम शोक की अधिकता से टी.बी. तथा रक्तकास होकर न जाने कब के मर भी जाते। मैं ख़ुदा तआला की क़सम खाकर कहता हूं जिसकी झूठी क़सम खाना लानती का काम है और इस क़सम को सच न समझना भी लानती का काम कि मेरा सम्मान और मान्यता मुबाहल: से पहले एक बूँद के समान थी और अब मुबाहल: के बाद एक दरिया के समान है।

निष्कर्ष यह कि प्रत्येक पहलू से ख़ुदा ने मेरी सहायता की, यहां तक कि मैंने ख़ुदा तआला से इल्हाम पाकर अपनी पुस्तकों में एक भविष्यवाणी प्रकाशित की थी कि अब्दुल हक़ ग़ज़नवी नहीं मरेगा जब तक मेरा चौथा बेटा पैदा न हो। तो अल्हम्दो लिल्लाह कि वह भी तुम्हारे जीवन में ही पैदा हो गया जिस का नाम मुबारक अहमद है, इसी प्रकार सौ के लगभग अन्य निशान प्रकट हुए और सम्मान पर सम्मान प्राप्त होता गया, यहां तक कि दुश्मनों ने मेरे सम्मान को अपने लिए एक अज़ाब देखकर ईर्ष्या के दर्द से मुक़द्दमें भी बनाए। परन्तु हर मैदान में अपमानित और तिरस्कृत रहे। अब बताओ कि तुम्हें मुबाहल: के बाद कौन सा सम्मान और मान्यता मिली और कितने लोगों ने तुम्हारी बैअत की और कितनी आर्थिक सफलताएं

प्राप्त हुईं और कितनी सन्तान हुईं? बल्कि तुम्हारा मुबाहल: तो तुम्हारी जमाअत के मौलवी अब्दुल वाहिद को भी ले डूबा और उसकी भी पत्नी की मृत्यु होने से घर बर्बाद हुआ। मुझे ख़ुदा ने वादा दिया था कि मुबाहल: के बाद दो और लड़के तुम्हारे घर पैदा होंगे तो दो और पैदा हो गए। और वे दोनों भविष्यवाणियां जो सैकड़ों लोगों को सुनाई गईं थीं पूरी हो गईं। अब बताओ कि तुम्हारी भविष्यवाणी कहां गई। कुछ उत्तर दो कि इस बकवास के बाद कितने लड़के पैदा हुए, कुछ इन्साफ से कहो कि जबकि तुम मुंह से वादे करके और विज्ञापन के द्वारा लड़के की प्रसिद्धि करके फिर बिल्कुल असफल, हताश एवं निराश रहे। क्या यह सम्मान था या अपमान था? इसमें कुछ सन्देह नहीं कि मुबाहल: के बाद जो कुछ मान्यता मुझे प्राप्त हुई वह सब तुम्हारे अपमान का कारण थी।

**उसका कथन-** क्या आथम और मिर्ज़ा अहमद बेग का दामाद और आप के वादा दिए गए बेटे का कोई परिणाम प्रकटन में आया?

**मेरा कथन-** हज़ारों बुद्धिमान लोग इस बात को स्वीकार कर चुके हैं कि आथम भविष्यवाणी के अनुसार मर गया और यदि जीवित है तो प्रस्तुत करो। यदि यह कहो कि समय-सीमा के अन्दर नहीं मरा तो यह तुम्हारी मूर्खता है कि ऐसा सोचो। क्योंकि भविष्यवाणी शर्त वाली थी और शर्त के पूरा होने के समय सीमा को टाल दिया था। मैं आप से पूछता हूं कि यूनुस नबी को सच्चा नबी मानते हो या नहीं? उसकी भविष्यवाणी क्यों ग़लत हो गई। उसमें तो कोई शर्त भी नहीं थी। फिर यदि शर्म और ईमान है तो शर्त वाली भविष्यवाणियों पर क्यों ऐतराज करते हो। देखो यून: नबी की किताब और 'दुर्रे मन्सूर'

कि कैसे यून: नबी को भविष्यवाणी के ग़लत होने से कष्ट उठाने पड़े। अब यूनुस को मुझ से बहुत अधिक बुरा कहो कि उसकी अटल भविष्यवाणी जिसके साथ कोई भी शर्त न थी ग़लत निकली। हे मूर्खो! इस्लाम पर क्यों कुल्हाड़ी चलाते हो। सच यही है कि वईद (सचेत करने) की भविष्यवाणी में ख़ुदा तआला के अधिकार में होता है कि तौब:, इस्तिग़फ़ार (पाप से क्षमायाचना) और ख़ुदा की तरफ लौटने से उसमें विलम्ब डाल दे। यद्यपि उसके साथ कोई भी शर्त न हो। यदि ऐसा न हो तो समस्त दान-पुण्य और दुआएं ग़लत हो जाएँगी और यह सिद्धान्त जो समस्त नबियों का मान्यता प्राप्त है कि

يُرَدُّ الْقَضَاءُ بِالصَّدَقَاتِ وَالدُّعَاء

सही नहीं रहेगा। इसके अतिरिक्त प्रत्येक बुद्धिमान सोच सकता है कि मेरा और डिप्टी आथम का मुकाबला मेरे किसी दावे के सम्बन्ध में न था। इस सम्पूर्ण बहस के उद्देश्य का ख़ुलासा यही था कि आथम यह कहता था कि ईसाई धर्म सच्चा है और नऊज़ुबिल्लाह हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम झूठे हैं और क़ुर्आन ख़ुदा का कलाम नहीं बल्कि मनुष्य का बनाया हुआ झूठ है और मैं कहता था कि ईसाई धर्म अपनी असलियत पर स्थापित नहीं तथा तस्लीस (तीन ख़ुदा होने की आस्था) और कफ़्फ़ारा: इत्यादि सब ग़लत हैं। तो जब बहस के पन्द्रह दिन समाप्त हो गए तो अन्तिम दिन में जैसा कि ख़ुदा तआला ने इल्हाम किया, मैंने उसी बहस की मज्लिस में जिसके सत्तर से अधिक मुसलमान और ईसाई मौजूद होंगे आथम को सम्बोधित करके कहा कि तुमने अपनी पुस्तक में हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम दज्जाल रखा है और इस्लाम को झूठा धर्म ठहराया है। देखो

इस समय तुमने ईसाई धर्म के सहायक होकर बहस की है और मैंने इस्लाम को सच समझ कर उसकी सहायता में बहस की है। अब मैं ख़ुदा से इल्हाम पाकर कहता हूं कि हम दोनों में से जो व्यक्ति झूठे धर्म का सहायक है वह सच्चे के जीवित होने की हालत में ही हाविया: में गिराया जाएगा अर्थात् मरेगा। परन्तु जो सच्चे धर्म का सहायक वह सुरक्षित रहेगा और झूठे की मौत पन्द्रह महीने के अन्दर इस हालत में होगी जबकि वह सच की ओर कुछ भी रुजू (लौटना) नहीं करेगा जब मैं यह भविष्यवाणी वर्णन कर चुका जिस का यह आशय है तो उसी समय आथम ने जीभ निकाली और तौब: करने वालों की तरह दोनों हाथ उठाए और दज्जाल कहने से अपनी शर्मिन्दगी व्यक्त की। तो निस्सन्देह एक ईसाई की ओर से यह एक लौटना है जिसके सत्तर से अधिक मुसलमान और ईसाई गवाह हैं। इसके बाद निरन्तर पन्द्रह महीने तक अब्दुल्लाह आथम का एकान्त कोने में बैठना और अमृतसर के ईसाइयों की सगंत को छोड़ना और कानून की दृष्टि से नालिश करने का अधिकार रखकर फिर भी नालिश न करना। और इक़रार करना कि मैं इन लोगों की तरह हज़रत मसीह को ख़ुदा का बेटा नहीं मानता और इनाम के तौर पर चार हज़ार रुपए प्रस्तुत करने के बावजूद क़सम खाने से इन्कार करना और भविष्यवाणी की समय सीमा में इस्लाम के खण्डन में एक अक्षर भी न लिखना तथा रोते रहना और अपनी पुरानी आदत के विपरीत मुसलमानों से मुबाहस: को छोड़ देना ये समस्त ऐसी बातें हैं कि यदि मनुष्य उपद्रवी और बेरहम न हो तो उनसे अवश्य परिणाम निकालेगा कि निस्सन्देह अब्दुल्लाह आथम भविष्यवाणी सुनने के बाद डरा और इस्लामी श्रेष्ठता को दिल

में बैठाया। इसलिए अवश्य था कि अपने रुजू करने के यथायोग्य इल्हामी शर्त से लाभ उठाता। फिर इन सब बातों से को छोड़कर वह व्यक्ति कैसा मुसलमान है जो इस प्रकार के धार्मिक मुबाहस: में जिस का नऊज़ुबिल्लाह मेरे पराजित होने की हालत में इस्लाम पर बुरा प्रभाव पड़ता है फिर भी कहे जाता है कि ईसाइयों की विजय हुई और भविष्यवाणी झूठी निकली। हे मूर्ख यदि भविष्यवाणी झूठी निकली तो फिर तुझे ईसाई हो जाना चाहिए। क्योंकि इस स्थिति में ईसाई धर्म का सच्चा होना सिद्ध हुआ। तुम लोगों के लिए गर्व की बात कैसे थी कि दो व्यक्ति दो क़ौमों में से इस्लाम के मुकाबले पर उठे। अर्थात् आथम और लेखराम। उनको एक आकाशीय फैसले के तौर पर सुनाया गया कि जो व्यक्ति झूठे धर्म पर होगा वह उस व्यक्ति से पहले मर जाएगा जो सच्चे धर्म पर क़ायम है। अत: आथम और लेखराम मेरे जीवन में ही दोनों ही मर गए और मैं ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल से अब तक जीवित हूं। यदि इस्लाम सच्चा न होता तो संभव था, बल्कि आवश्यक था कि मैं उन से पहले मर जाता। इसलिए ख़ुदा से डरो और उस विजय को जो ख़ुदा के पूर्ण फ़ज़्ल से इस्लाम को प्राप्त हुई, मेरी ईर्ष्या के लिए पराजय की शैली में वर्णन मत करो। देखो इस समय आथम कहां है? लेखराम किस देश में है? क्या यह सच नहीं कि कई वर्ष हुए कि आथम मृत्यु पा गया और फ़ीरोज़पुर में उस की क़ब्र है। तो जबकि भविष्यवाणी का मूल उद्देश्य आथम का मेरे जीवन में ही मृत्यु पा जाना था पूरी हो चुकी, तो क्यों बार-बार समय-सीमा का वर्णन करके रोते हो और कहते हो कि मृत्यु को प्राप्त तो हुआ परन्तु समय-सीमा के अन्दर मृत्यु-प्राप्त नहीं हुआ। यह

कैसा बेकार बहाना है। हे मूर्खो! और ख़ुदा की शरीअत के रहस्यों से लापरवाहो! जब वईद (सचेत करने) की भविष्यवाणी में ख़ुदा को यह भी अधिकार है कि तौब: और ख़ुदा की ओर लौटने से अज़ाब को सिरे से ही टाल देता है, तो क्या समय-सीमा की न्यूनाधिकता उस पर कोई आरोप पैदा कर सकती है-

سُبۡحٰنَ اللّٰہِ عَمَّا یَصِفُوۡنَ (अलमोमिनून-92)

स्पष्ट है कि ख़ुदा तआला अपनी रहमत तथा दयापूर्ण सुविधा को गुप्त रखना नहीं चाहता। तो जबकि आथम ने भविष्यवाणी को सुनकर उसी समय सर झुका दिया और जीभ (ज़ुबान) निकाल कर तथा दोनों हाथ उठा कर तौब: और शर्मिन्दगी के लक्षण प्रकट किए जिसके गवाह डॉक्टर मार्टिन क्लार्क भी हैं तथा बहुत से सम्माननीय मुसलमान और ईसाई जिन में से मेरे विचार में खान मुहम्मद यूसुफ़ खां साहिब रईस अमृतसर भी हैं जो उस समय मौजूद थे। तो क्या इस रुजू (लौटने) ने शर्त का कोई भाग पूरा न किया। मैं सच-सच कहता हूं कि आरोप इस स्थिति में होना था जबकि आथम के इतने विनय, भय और विनम्रता के बावजूद जो उसने व्यक्त की और इसके बावजूद कि वह ग़म के कारण पागल हो गया तथा भविष्य में मुकाबले और मुबाहसे से ज़ुबान बंद कर ली, फिर भी ख़ुदा तआला अपनी शर्त का कुछ भी उसको लाभ न पहुंचाता और क्रूरतापूर्वक समय-सीमा के अन्दर ही उसके जीवन को समाप्त कर देता। क्या इस से ख़ुदा की पवित्र विशेषताओं का ज्ञान प्राप्त नहीं होता कि उसने आथम के गिड़गिड़ाने और डर का भी उसे लाभ पहुंचा दिया, फिर भविष्यवाणी के आशय के अनुसार उसके जीवन की डोरी को भी तोड़ दिया ताकि

सिद्ध हो कि आथम ने जितनी विनम्रता एवं भय व्यक्त किया, प्रत्यक्षत: उसका बदला यह था कि कम से कम उसे दस वर्ष का और जीवन दिया जाता, ताकि इस आयत के अनुसार

فَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهُ (अज़्ज़िल्ज़ाल-8)

वह अपने हार्दिक भय का पूर्ण बदला पा लेता, परन्तु ख़ुदा तआला ने उसे शीघ्र इसलिए मार दिया ताकि पादरी लोग ना समझ लोगों को धोखा न दें और अपने धर्म की सच्चाई पर उसके जीवित रहने का प्रमाण न ठहराएं। मैं तो उसी समय डर गया था जबकि सार्वजनिक सभा में आथम ने अपनी ज़ुबान मुंह से निकाली और रोने वाला रूप बना कर दोनों हाथ उठाए और व्यक्त किया कि मैं आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सम्मान करता हूं। मुझे उसी समय विचार आया था कि अब यह व्यक्ति अपनी इस शर्मिन्दगी के इक़रार से रहीम (दयालु) ख़ुदा की चौखट पर गिरा है। देखिए इस का परिणाम क्या होगा। क्योंकि मैं जानता था कि ख़ुदा दयालु है। उसकी इस विशेषता के कारण यूनुस नबी पर विपत्ति आई और जिन के लिए उसने चालीस दिन तक एक घातक अज़ाब का वादा किया था, उन के दामन का थोडा सा कोना भी नहीं फटा। याद रहे कि सच के अभिलाषियों को इस भविष्यवाणी से एक ज्ञान संबंधी लाभ भी प्राप्त होता है। और वह यह कि आथम की भविष्यवाणी उसके डरने और भयभीत होने के कारण जमाली रूप में प्रकट हुई और लेखराम से संबंधित भविष्यवाणी उसकी धृष्टता तथा गालियां देने के कारण जो भविष्यवाणी के बाद और भी अधिक हो गई थीं जलाली (प्रतापी) रूप में प्रकट हुई और उसकी ज़ुबान की छुरी अन्त में उसी पर चल गई।

यह तो आथम के बारे में हमने वर्णन किया और अहमद बेग के दामाद के बारे में हम बार-बार वर्णन कर चुके हैं कि इस भविष्यवाणी की दो टांगे थीं- एक अहमद बेग की मौत के बारे में और एक उसके दामाद के बारे में। अत: तुम सुन चुके हो कि काफ़ी समय हुआ कि अहमद बेग भविष्यवाणी के आशय के अनुसार मृत्यु पा चुका है और उसकी क़ब्र होशियारपुर में मौजूद है। रहा उसका दामाद तो भविष्यवाणी की शर्त के कारण उसकी मृत्यु में विलम्ब डाल दिया गया और हम वर्णन कर चुके हैं कि भविष्यवाणी शर्त वाली थी। फिर जब अहमद बेग शर्त से लापरवाह रह कर मर गया तो उसकी मौत ने उसके दामाद तथा अन्य निकट संबंधियों को यह अवसर दिया कि वे डरें और शर्त से लाभ उठाएं। तो ऐसा ही हुआ। अहमद बेग और उस के दामाद के बारे में जो शर्त वाला इल्हाम था उसकी इबारत यह थी-

اَيَّتُهاالمرأة توبی توبی فان البلاء عَلٰی عَقِبک

अत: मुझे याद है कि यह इल्हाम घटना से पूर्व होशियारपुर में शेख़ मेहर अली के मकान पर हाफ़िज़ मुहम्मद यूसुफ़ या मुंशी मुहम्मद याकूब और मुंशी इलाही बख़्श साहिब की उपस्थिति में आपकी जमाअत में से एक व्यक्ति को जिसका नाम अब्दुर्रहीम था या अब्दुल वाहिद था सुनाया गया था और बाद में यह इल्हाम छप भी गया था। निष्कर्ष यह कि यह भविष्यवाणी शर्त वाली थी जैसा कि आथम की भविष्यवाणी शर्त वाली थी। और यदि वह शर्त वाली भी न होती तब भी सचेत करने वाली पेशगोई के वादे के कारण यूनुस नबी की भविष्यवाणी के समान होती। ख़ुदा की बातों का परिणाम धैर्यपूर्वक देखना चाहिए न कि शरारत से आरोप।

वादा दिए गए पुत्र के बारे में जो आरोप था उस से यदि कुछ सिद्ध होता है तो केवल यही कि हमारे विरोधियों की कुछ ऐसी बुद्धि मारी गई है कि आरोप करने के समय उन्हें यह भी याद नहीं रहता कि आरोप का कोई अवसर भी है या नहीं। हे मूर्ख! ख़ुदा तआला ने जैसा कि वादा किया था मुझे चार लड़के प्रदान किए और प्रत्येक लड़के के पैदा होने से पहले मुझे अपनी विशेष वह्यी के द्वारा उसके पैदा होने की ख़ुशख़बरी दी और वे चारों ख़ुशख़बरियां चार विज्ञापनों द्वारा समय से पूर्व संसार में प्रकाशित की गईं जिनके लाखों लोग इन देशों में गवाह हैं। फिर मैं समझ नहीं सकता कि आरोप क्या हुआ। आरोप तो तुम्हारी हालत पर पड़ता है कि मुंह से निकाला कि ख़ुदा के फ़ज़्ल से मेरे यहां लड़का होगा। इस भविष्यवाणी को विज्ञापन में प्रकाशित किया। फिर वह लड़का अन्दर ही अन्दर घुल गया उसे बाहर आना प्राप्त नहीं हुआ काश वह मुर्दा ही पैदा होता, ताकि तुम्हारे हाथ में कुछ बात तो रह जाती। यह भी मुबाहल: का दुष्प्रभाव तुम पर पड़ा कि सन्तान से असफल रहे। अत: मेरे घर में तो सन्तान की खुशखबरी के बाद चार लड़के हुए और प्रत्येक लड़के की पैदायश से पूर्व ख़ुदा ने ख़बर दी जिसको मैंने हज़ारों लोगों में प्रकाशित किया, परन्तु तुम बताओ कि तुम्हारे घर में क्या पैदा हुआ। तुम तो अब तक इस आरोप के नीचे हो। काश एक सच्चे से मुबाहल: न करते तो शायद अब तक लड़का हो जाता। तो दर्पण लेकर अपना दोष देखो। मुझ पर मीन-मेख करने का कोई स्थान नहीं। हाँ यदि मैंने कोई ऐसा इल्हाम प्रकाशित किया है जिस के यह मायने हों कि इसी इल्हाम के निकट गर्भ से और इसी वर्ष में वह लड़का पैदा होगा तो वह मेरा इल्हाम प्रकाशित कर दो परन्तु

सावधान! कोई इस प्रकार का आरोप प्रस्तुत न करना जो इस से पहले कुछ मुनाफ़िकों (कपटाचारियों) ने हुदैबिय: के किस्से पर प्रस्तुत किया था जिससे उमर फ़ारूक़ को ख़ुदा ने बचाया और मुनाफ़िक तबाह हुए।

हे प्रियजन! मुझ से वैर के लिए तुम मुहम्मदी शरीअत से क्यों अलग होते हो। यहां तो तुम्हारे हाथ डालने का कोई स्थान नहीं। और यद्यपि कि यह सर्वमान्य आस्था है कि कभी नबी अपनी भविष्यवाणी के स्थान और अवसर के समझने में ग़लती भी कर सकता है। अत: उलेमा इस पर हदीस का तर्क ذَهب وَهْلِى प्रस्तुत करते हैं। जो बुख़ारी में मौजूद है। इस से यह परिणाम निकालते हैं कि किसी तावील की ग़लती से भविष्यवाणी ग़लत नहीं ठहर सकती और न ग़ैर इल्हामी ठहर सकती है। तो जब नबियों की भविष्यवाणी में यहां तक व्यापकता है कि नबी के ग़लत मायने भविष्यवाणी को कुछ हानि नहीं पहुंचाते तो फिर आरोप उसी स्थिति में होगा जब इल्हाम का उसी के शब्दों से ग़लत होना सिद्ध हो जाए।

**उसका कथन-** मिर्ज़ा निस्सन्देह जानता है कि इस व्यर्थ कार्य के लिए न किसी ने आना है और न यह कार्य होना है मुफ़्त की मेरी शेखी प्रसिद्ध हो जाएगी।

**मेरा कथन-** हे ना समझ! ख़ुदा से डर। क्या धर्म के कार्य को व्यर्थ कार्य कहता है? क्या ख़ुदा के नबी व्यर्थ कार्य में ही व्यस्त रहे। हे प्रिय! क्या यह कार्य व्यर्थ है जिस से हज़ारों प्राण झूठ और गुमराही से मुक्ति पाते हैं और इस उम्मत की आन्तरिक फूट जिसने मुसलमानों को कमज़ोर कर दिया है दूर होती है। यदि यह कार्य व्यर्थ है तो क्या दूसरे कार्य शरीअत के लिए आवश्यक थे जो आप लोग कर रहे हैं।

उदाहरणतया नज़ीर हुसैन देहलवी वृद्धावस्था के बावजूद शेख़ मुहम्मद हुसैन बटालवी के लड़के की शादी पर बटाला आया और सियालकोट के ज़िले तक गया। खाने-पीने के अतिरिक्त और क्या मतलब था। इस युग में मुसलमानों की हालत इसी कारण पतन में है कि वर्तमान समय के मौलवी आवश्यक कार्यों का नाम व्यर्थ कार्य रखते हैं और अपने स्वार्थ संबंधी व्यापारों के लिए अदन और मस्क़त तक भ्रमण कर आते हैं उसे कोई व्यर्थ नहीं समझता। परन्तु इस्लाम के समर्थन के कार्यों को अनावश्यक समझते हैं और यों गोश्त-पुलाव खाने तथा शादियों की दावतों में शामिल होने के लिए सैकड़ों कोस चले जाते हैं। यह अच्छी धार्मिकता है कि यों तो देश में शोर मचा रहे हैं कि जैसे इस जमाअत में शामिल होकर तीस हज़ार आदमी काफ़िर हो गया और होता जाता है। और जब कहा जाए कि आओ फैसला करो तो उत्तर मिलता है कि इस व्यर्थ कार्य के लिए उलेमा को फ़ुर्सत कहां है और किराए के लिए खर्च कहां। हम इस समय ऐसे उलेमा को ख़ुदा की हुज्जत पूर्ण करने के लिए किराए की सहायता देने को भी उपरोक्त कथित शर्तों के अनुसार तैयार हैं। काश किसी प्रकार उनके दिल सीधे हों। इस्लाम ने सब धर्मों पर विजयी होना है। उनके हाथ में यह कैसा इस्लाम है जो उन्हें सन्तोष नहीं दे सकता। तो अब हम ने उनका यह बहाना भी तोड़ दिया।

**उसका कथन-** हे नए ईसाइयो और नया गिरजा बनाने वालो! हम एक सरल और बहुत आसान उपाय बताते हैं।

**मेरा कथन-** हे सीमा से आगे बढ़ने वाले! क्या उन मुसलमानों का नाम ईसाई रखता है जो इस्लाम के सहायक और पृथ्वी पर ख़ुदा की हुज्जत हैं। यदि मुसलमान तेरे जैसे ही होते तो इस्लाम का अन्त

था। तत्पश्चात् आप ने हंसी-ठट्ठे से मौलवी अब्दुल करीम साहिब की चर्चा की है और निशान यह मांगा है कि कथित मौलवी साहिब को जो एक टांग में कुछ कमज़ोरी है तथा एक आंख की दृष्टि में दोष है ये दोनों रोग जाते रहें। इस चर्चा से आपका मूल उद्देश्य केवल हंसी-ठट्ठा करना है और यह कथन उन काफ़िरों के समान है जो नऊज़ुबिल्लाह आंहजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अबतर✳ कहते थे और यह निशान मांगते थे कि यदि यह सच्चा नबी है तो इसके जितने लड़के मर गए हैं उनको जीवित कर दे। परन्तु हम इस ठट्ठे का अभी उत्तर दे चुके हैं। स्पष्ट है कि इंसान अपने मनुष्य होने के कारण किसी न किसी दोष से खाली नहीं होता और हमेशा रोग एवं आपदाएं लगी रहती हैं। प्रियजन और परिजन भी मरते हैं परन्तु कोई सभ्य व्यक्ति निशान मांगने के बहाने से इस प्रकार से दिल नहीं दुखाता। यह सदैव से कमीनों तथा मूर्खों का काम है। हमारे देश में इस प्रकार का ठट्ठा और हंसी अधिकतर मरासी किया करते हैं। हमें मालूम नहीं कि मियाँ अब्दुल हक़ ने क्यों यह ढंग अपनाया है। भला यदि अभी कोई मियाँ अब्दुल्लाह ग़ज़नवी पर कुछ ऐसे आरोप कर दे कि यदि वह मुल्हम था तो उसको चाहिए था तो अपने अमुक-अमुक व्यक्तिगत दोष दूर करता और लोगों को यह निशान दिखाता तो मुझे मालूम नहीं कि ग़ज़नवी साहिबान इन का क्या उत्तर देंगे। हे प्रिय! यदि तुम दूसरे को इस प्रकार से दुःख दोगे तो वह तुम्हारे बाप और तुम्हारे मुर्शिद (मार्ग-प्रदर्शक) तक पहुँचेगा। तो इन उपद्रव भड़काने वाली बातों से लाभ क्या हुआ, बल्कि ख़ुदा के नज़दीक अपने बाप

✳ **अबतर** - जिसकी नर सन्तान न हो

और अपने मुर्शिद का तिरस्कार करने वाले तुम स्वयं ठहरोगे। और यदि ख़ुदा के प्रारब्ध से स्वयं तुम्हारी दोनों आँखों पर मोतियाबिन्द उतर आए या टांगों पर फ़ालिज पड़े तो यह सब हंसी याद आ जाए। हे लापरवाहो! दूसरों पर क्यों दोष लगाते हो। क्या संभव नहीं कि स्वयं तुम किसी समय ऐसे शारीरिक दोष में ग्रस्त हो जाओ कि लोग तुम पर हंसें या तुम्हारे छूने से बचें। ख़ुदा से डरो और काफ़िरों का आचरण ग्रहण न करो। याद रखो कि समस्त नबियों ने उन लोगों को लानती ठहराया है जो नबियों और मामूरों से स्वयं बनाए हुए निशान मांगते हैं। देखो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने क्या फ़रमाया कि इस युग के हरामकार मुझ से निशान मांगते हैं उन्हें कोई निशान नहीं दिखलाया जाएगा। ऐसा ही क़ुर्आन ने उन लोगों का नाम लानती रखा जो लोग हमारे सरदार हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अपने बनाए हुए निशान मांगा करते थे जिन का पवित्र क़ुर्आन में अनेकों बार लानत के साथ वर्णन है। जैसा कि वे लोग कहते थे-

فَلْيَأْتِنَا بِآيَةٍ كَمَا أُرْسِلَ الْأَوَّلُونَ (अल अंबिया - 6)

अर्थात् हमें हज़रत मूसा के निशान दिखाए जाएँ या हज़रत मसीह के और कभी आकाश पर चढ़ जाने का निवेदन करते थे और कभी यह निशान मांगते थे कि आप के लिए सोने का घर बन जाए। उन्हें हमेशा नहीं में उत्तर मिलता था। सम्पूर्ण पवित्र क़ुर्आन को प्रारम्भ से अन्त तक देखो, कहीं इस बात का नामोनिशान नहीं पाओगे कि किसी काफ़िर ने अपनी ओर से यह निशान मांगा कि किसी की टांग ठीक कर दो या आंख ठीक कर दो या मुर्दा जीवित कर दो। तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वही काम कर दिया हो

और न इंजील में इसका कोई उदाहरण मिलेगा कि काफ़िर निशान मांगते आए और उन्हें दिखाया गया, बल्कि एक बार ख़ुद सहाबा ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में निवेदन किया कि अमुक व्यक्ति जिसकी नई शादी हुई थी और सांप के काटने से मर गया था उसको जीवित कर दो तो आप ने फ़रमाया कि जाओ अपने भाई को दफ़्न करो। अत: पवित्र क़ुर्आन इस बात से भरा पड़ा है कि मक्का के गंदे और हरामकार काफ़िर आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से भिन्न-भिन्न प्रकार के निशान मांगा करते थे और हमेशा इस प्रश्न के स्वीकार होने से वंचित रहते तथा ख़ुदा तआला से लानतें सुनते थे। इसी प्रकार सम्पूर्ण इंजील पढ़ कर देख लो कि अपने बनाए हुए निशान मांगने वाले हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से गालियां सुना करते थे। तो हे प्रियजन! कुछ ख़ुदा से डरो, आयु का भरोसा नहीं। ख़ुदा तआला मेरे हाथ पर निशान प्रकट करता है परन्तु उस सुन्नत के अनुसार जो सदैव से अपने मामूरों से रखता है। निस्सन्देह उस सुन्नत की अनिवार्यता से एक व्यक्ति यदि शैतान बन कर भी आए, तब भी उनको ख़ुदा के निशानों से क़ाइल कर दिया जाएगा। परन्तु यदि ख़ुदा की अनादि सुन्नत से विरुद्ध देखना चाहे तो उसका इस नेमत से कुछ भाग नहीं और निस्सन्देह वह ऐसा ही वंचित मरेगा जैसा कि अबू जहल इत्यादि वंचित मर गए। हे प्रिय! आप का अधिकार है कि उस प्रकार से जो ख़ुदा ने मुझे मामूर किया है। एक जमाअत लंगड़ों, लूलों, अन्धों, कानों तथा अन्य रोगियों की ले आओ और फिर उनमें से पर्चियां डालने की पद्धति पर जिस जमाअत को ख़ुदा मेरे सुपुर्द करेगा यदि उनमें मैं पराजित रहा तो जितनी तुम ने अपने विज्ञापन

में गालियां दी हैं उन सब का पात्र हूँगा अन्यथा वे समस्त गालियां तुम्हारी ओर लौटेंगी। देखो इस ढंग से भी तुम्हारा वही मतलब प्राप्त है। फिर यदि दिल में उपद्रव का तत्त्व नहीं तो ऐसा उल्टा तरीका क्यों अपनाते हो जिस तरीके के अपनाने वाले हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की ज़ुबान पर हरामकार कहलाए और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ुबान पर नारकी तथा लानती कहलाए। यदि तुम्हारे दिल में एक कण भर ईमान है तो यह तरीका जो मैं अल्लाह तआला की ओर से प्रस्तुत करता हूं इसमें हानि क्या है। क्या तुम गालियों तथा नास्तिक कहने से विजयी हो जाओगे। निस्सन्देह उसी गिरोह की विजय है जो नास्तिक नहीं हैं और ख़ुदा तआला पर सच्चा ईमान रखते हैं और हंसी ठट्ठे से परहेज़ करते हैं पहले काफ़िरों की तरह स्वयं बनाकर निशान नहीं मांगते, बल्कि ख़ुदा द्वारा प्रस्तुत निशान में विचार करते हैं। हे मृत्यु से लापरवाह! अमानत और ईमानदारी के तरीके से बाहर क्यों जाता है और ऐसी बातें ज़ुबान पर क्यों लाता है जिसमें तेरा दिल ही तुझे दोषी कर रहा है कि तू झूठ बोलता है। सच कह क्या अब तक तुझे ख़बर नहीं कि ख़ुदा को दास बना कर कोई बात परीक्षा के तौर पर उस से माँगना यह सदाचारियों का तरीका नहीं है बल्कि ख़ुदा के कलाम में इस तरीके को एक पाप और सम्मान को छोड़ना ठहराया गया है। क़ुर्आन को ध्यानपूर्वक पढ़ और फिर सोच कि जो लोग अपने बनाए हुए निशान मांगते थे अर्थात् अपने-अपने स्वयं निर्मित निशान मांगते थे उनको क़ुर्आन में क्या उत्तर मिलता था और वे अल्लाह तआला की दृष्टि में प्रकोप के पात्र थे या दया के पात्र थे। यदि कुछ लज्जा और शर्म तथा सच्चाई की छान-बीन करने

की रुचि है और यदि अपने दावे में सच्चे हो तो अपने उन उलेमा से जो धर्म का कुछ ज्ञान रखते हैं यह फ़त्वा लो कि क्या ख़ुदा पर यह हक़ अनिवार्य है कि जब उसके किसी नबी या मुहद्दिस या रसूल से काफ़िरों और बेईमानों का कोई फ़िर्का अपने बनाए हुए निशान मांगे तो वे निशान उनको दिखाए और यदि न दिखाए तो वह नबी जिस से ऐसा निशान मांगा जाए झूठा ठहरेगा। तो यदि यह फ़त्वा तुझे उलेमा से मिल गया तो मैं वादा करता हूं कि फिर तुझे तेरा प्रस्तुत किया हुआ निशान दिखला दूँगा और यदि न मिला तो तेरे झूठ का यह दण्ड तुझे पर्याप्त है कि तेरी ही क़ौम के प्रसिद्ध उलेमा ने तुझे झुठलाया और हमारी ओर से यह भविष्यवाणी याद रखो कि प्रसिद्ध उलेमा जैसे नज़ीर हुसैन देहलवी और रशीद अहमद गंगोही तुझे हरगिज़ यह फ़त्वा नहीं देंगे, यद्यपि तू उनके सामने रोता-रोता मर भी जाए। और दर्शकों को चाहिए कि इस व्यक्ति का जो ख़ुदा की शरीअत में अक्षरांतरण और परिवर्तन करता है पीछा न छोड़े जब तक उलेमा का ऐसा फ़त्वा प्रस्तुत न करे। क्योंकि वह जो उसने निशान मांगने में अपनाया है वह ख़ुदा से हंसी और ठट्ठा है। याद रहे कि सब से पहले संसार में शैतान ने हज़रत ईसा से बैतुल मुक़द्दस में निशान मांगा था और कहा था कि स्वयं को इस इमारत से नीचे गिरा दे। यदि जीवित बचा रहा तो मैं तुझ पर ईमान लाऊंगा। परन्तु हज़रत मसीह ने फ़रमाया- दूर हो हे शैतान। क्योंकि लिखा है कि ख़ुदा की परीक्षा न ले। इस स्थान पर एक पादरी साहिब इंजील की व्याख्या में लिखते हैं कि वास्तव में वह इन्सान ही था जिसने हज़रत मसीह से स्वयं बनाया हुआ निशान मांगा था और हज़रत मसीह ने स्वयं उसका नाम शैतान रखा। क्योंकि

उसने ख़ुदा को अपनी इच्छा का दास बनाना चाहा। तो इंजील के इस किस्से के अनुसार मियाँ अब्दुल हक़ के लिए भी बड़े भय का स्थान है। जब मनुष्य ईमानदारी से बात नहीं करता तो उस समय शैतान का दास होता है मानो स्वयं वही होता है। अत: आयत

مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ (अन्नास-6)

इसकी गवाह है।

**उसका कथन-** मिर्ज़ा और मिर्ज़ाइयों को क़यामत, हिसाब, जन्नत और दोज़ख़ (नर्क) पर ईमान नहीं नास्तिक धर्म के मालूम होते हैं। क्योंकि जिस को क़यामत पर ईमान होता है वह ऐसा आज़ाद, धोखेबाज़ ख़ुदा पर झूठ बांधने वाला, रसूलुल्लाह तथा लोगों पर झूठ बांधने वाला नहीं होता।

**मेरा कथन-** मैं सच-सच कहता हूं कि ये समस्त विशेषताएं आप लोगों में हैं। बल्कि आप लोग नास्तिकों से अधिक बुरे हैं। क्योंकि नास्तिक तो ख़ुदा तआला की हस्ती पर अपने ग़लत विचार में प्रमाण नहीं पाता, परन्तु आप लोग ईमान का दावा करके भी फिर घृणा योग्य झूठ बोल रहे हैं। क्योंकि आप लोग जब यह कहते हैं कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पार्थिव शरीर के साथ जीवित आकाश पर चले गए थे तो उस समय आप लोग ख़ुदा और उसके रसूल पर स्पष्ट तौर पर झूठ बांधते हैं और यदि झूठ नहीं बांधते तो तुम्हें ख़ुदा की क़सम है कि बताओ कि पवित्र क़ुर्आन में कहां लिखा है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु नहीं हुई। अफ़सोस कि पवित्र क़ुर्आन में فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ की आयत पढ़ते हो और भली भांति जानते हो कि सम्पूर्ण पवित्र क़ुर्आन में हर स्थान पर تَوَفِّيْ रूह कब्ज़ करने के अर्थ

में है और ऐसा ही विश्वास रखते हो कि समस्त हदीसों में भी تَوَفِّیْ कब्ज़ रूह के अर्थ में है और फिर झूठ गढ़ने के तौर पर कहते हो कि इस स्थान पर تَوَفِّیْ जीवित उठा लेने के अर्थ में है। तो यदि तुम इस स्थान पर रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर झूठ नहीं बांधते तो बताओ और प्रस्तुत करो कि किस हदीस में है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पार्थिव शरीर के साथ जीवित आकाश पर चले गए थे। हाय अफ़सोस इतना झूठ और झूठ बांधना। हे लोगो! क्या तुमने मरना नहीं? क्या कभी भी कब्र का मुंह नहीं देखोगे-

ازافتراءوکذب شماخوں شدست دل
داند خدا کہ زیں غم دیں چوں شدست دل
ہیچم عیاں نشد کہ شمارا بکینہ ام
زینساں چرادلیرودگرگوں شدست دل

फिर जबकि हदीस-ए-नबवी से यह सिद्ध नहीं कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर चले गए थे या पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर से उतरने वाले हैं और क़ुर्आन उन को उन लोगों में दाख़िल करता है जो توفّی के आदेश के अन्तर्गत हैं। और मे'राज की हदीस इस बात का समर्थन करती है। क्योंकि आंहज़रत ने मे'राज की रात में हज़रत ईसा को मृत्यु प्राप्त रूहों में देखा है और एक सौ पच्चीस वर्ष की आयु जो हदीसों में वर्णन की गई है वह स्पष्ट कहती है कि हज़रत ईसा इतना समय गुज़रने के बाद अवश्य मृत्यु पा गए हैं। इसी प्रकार कंज़ुलउम्माल की वह हदीस जिस से सिद्ध होता है कि सलीब के बाद हज़रत ईसा दूसरे देश में चले गए इसकी समर्थक है। तो फिर यह ख़ुदा और उसके

रसूल पर कितना झूठ बांधना है कि आप लोग अब तक इस झूठी आस्था से नहीं रुकते। यदि संसार में वही मसीह अलैहिस्सलाम दोबारा आने वाला होता तो ख़ुदा तआला उसको मृत्यु प्राप्त न कहता और हदीस में किसी स्थान पर इस बात का स्पष्टीकरण होता कि हज़रत ईसा पार्थिव शरीर के साथ जीवित आकाश पर चले गए हैं और किसी समय पार्थिव शरीर के साथ जीवित उतरेंगे। परन्तु अब तो समस्त हदीसें देख ली गईं इस बात का पता नहीं चलता कि किस समय हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम जीवित पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर चले गए थे और फिर जीवित पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर से उतरेंगे। और उतरने वाले की विशेषता में यह तो लिखा है कि امامکم منکم। परन्तु यह नहीं लिखा कि

امامکم من انبیاء بنی اسرائیل

अब सोचो कि झूठ गढ़ने की लानत क़ुर्आन और हदीस किस पर करते हैं? हम पर या तुम पर। यदि हमारे इस प्रमाण का कुछ उत्तर है तो प्रस्तुत करो। अन्यथा तुम ख़ुदा के नज़दीक निस्सन्देह झूठे हो और फिर इसी पर बस नहीं। बात-बात में तुम्हारे झूठ प्रकट हैं और तुम्हारी ज़ुबानें झूठ से गन्दी हैं। भला बताओ कि मुबाहले के बारे में जो मेरे साथ तुम ने किया था तुम ने बार-बार कितना झूठ बोला और कहा कि मुबाहले में मुझ को विजय हुई। हे सच्चाई के शत्रु और शर्म का त्याग करने वाले! सोच और समझ कि ख़ुदा ने तो उसी समय उसी स्थान में मुंशी मुहम्मद याक़ूब की गवाही से तुझे अपमानित किया। क्या यही तेरी विजय थी कि तेरे ही उस्ताद अब्दुल्लाह ग़ज़नवी ने मेरी सच्चाई की गवाही दे दी। अब यदि मैं

झूठा हूं और क़यामत, हिसाब और नर्क पर मुझे ईमान नहीं तो तुझे साथ ही मानना पड़ेगा कि अब्दुल्लाह ग़ज़नवी तेरा उस्ताद तुझ से बढ़कर झूठा था और क़यामत, हिसाब तथा स्वर्ग एवं नर्क पर ईमान नहीं रखता था, क्योंकि तुम्हारे कथनानुसार उसने एक ऐसे आदमी को सच्चा और ख़ुदा की ओर से आने वाला ठहराया जो ख़ुदा पर झूठ बांधता था। हे मूर्ख! तेरी ये समस्त गालियां तेरी ओर ही लौटती हैं जब तक तू यह सिद्ध न करे कि जो कुछ तेरे उस्ताद अब्दुल्लाह ने गवाही दी वह सही नहीं है। हे ज़ालिम! तू क्यों उस्ताद का अवज्ञाकारी बनता है। तुझे तो चाहिए था कि सब से पहले तू ही मुझे स्वीकार करता, क्योंकि तूने अपने इस विज्ञापन में भी अपने नाम के साथ ये शब्द लिखे हैं-

"अब्दुल हक़ ग़ज़नवी शिष्य हज़रत मौलाना मौलवी अब्दुल्लाह साहिब ग़ज़नवी"

हे असभ्य! तू ने अपने उस्ताद को यही बदला देना था कि जिस व्यक्ति को वह सच्चा कहता है तू ने उसे महा झूठा ठहराया, जबकि तेरे इस विरोध के अनुसार अब्दुल्लाह ग़ज़नवी झूठ गढ़ने वाला ठहरा और उसने अकारण झूठ के तौर पर मुझे ख़ुदा के प्रकाशों का द्योतक ठहराया। तो अब तुझे तो शर्म से मर जाना चाहिए कि तू उसी झूठ गढ़ने वाले का शिष्य है। मैं नहीं कहता कि मौलवी अब्दुल्लाह गज़नवी झूठ गढ़ने वाला था और न मैं उसका नाम महा झूठा और धोखेबाज रखता हूं। परन्तु तू ने निस्सन्देह उसको झूठ गढ़ने वाला बना दिया। ख़ुदा तुझे इस गुनाह का दण्ड दे कि ऐसे नेक मनुष्य को तूने दुराचारी मनुष्य ठहरा दिया। क्योंकि जिस

हालत में वह मुझे सच्चा और ख़ुदा तआला की ओर से समझता है और मैं तेरे कथानुसार मुफ़्तरी, कज़्ज़ाब और दज्जाल हूँ तो यही नाम अब्दुल्लाह को भी तेरी ओर से तुहफ़ा पहुँचा परन्तु तुझ पर कोई क्या अफ़सोस करे। क्योंकि अब्दुल्लाह तो अब्दुल्लाह तूने तो उसके मुर्शिद को भी मुफ़्तरी ठहराया। क्योंकि मियाँ साहिब कोठे वाले जो मौलवी अब्दुल्लाह साहिब के मुर्शिद थे मौत के क़रीब वसीयत कर गए थे कि पंजाब में शीघ्र ही महदी प्रकट होने वाला है बल्कि पैदा हो चुका और अब हम उसके युग में हैं।★ वे लोग अब तक जीवित मौजूद हैं जिनको यह कश्फ़ सुनाया गया था। परन्तु हे सच को न पहचानने वाले! तू ने मुर्शिद के मुर्शिद का सम्मान भी दृष्टिगत न रखा तो शाबाश है तुझ पर कि तूने अपने मुर्शिद और मुर्शिद के मुर्शिद से ख़ूब नेकी की और उन का नाम झूठ गढ़ने वाला और महा झूठा रखा। यदि मौलवी अब्दुल्लाह साहिब की सन्तान अपने बाप का कुछ सम्मान करती है तो चाहिए कि ऐसे आदमी को तुरन्त अपनी जमाअत में से निकाल दें। क्योंकि जो उस्ताद और मुर्शिद का विरोधी हो उसके वुजूद में भलाई नहीं। हे असभ्य! क्या तू ऐसे बुज़ुर्ग का अपमान करता है जिसकी शागिर्दी को तू स्वयं मानता है। यदि तू यह उत्तर दे कि मुंशी मुहम्मद याक़ूब

★**हाशिया -** यद्यपि कथित मियाँ साहिब के मुंह से केवल महदी का शब्द निकला था कि वह पैदा हो गया और उसकी भाषा पंजाबी है। परन्तु श्रोताओं ने निश्चित निशानों की दृष्टि से यही समझा था कि उनका अभिप्राय महदी मौऊद है क्योंकि इस समय उसी की प्रतीक्षा है और लोगों का सामान्य बोलचाल का तरीका यही है कि जब उदाहरणतया कोई कहता है कि महदी कब प्रकट होगा तो उसका उद्देश्य महदी माहूद ही होता है और सम्बोधित व्यक्ति यही समझता है। (इसी से)।

केवल एक गवाह है तो यह दूसरी ख़ुशख़बरी भी सुन ले कि चूंकि अवश्य था कि मुबाहले के बाद हर प्रकार से ख़ुदा तुझे अपमानित करे और तेरी बदनामी संसार पर प्रकट हो। इसलिए उसी दिन जबकि हम मुबाहले से निवृत हो चुके या शायद दूसरे दिन शाम के समय हाफ़िज़ मुहम्मद यूसुफ़ दारोगा नहर ने जिन की बुज़ुर्गी को तुम सब लोग मानते हो मुझ से मुलाकात की और एक बड़ी जमाअत में जिसमें सौ के लगभग लोग थे गवाही दी कि मौलवी अब्दुल्लाह साहिब ने मुझे अपना एक कश्फ़ सुनाया है कि एक नूर आसमान से गिरा और वह क़ादियाँ में उतरा और मेरी सन्तान उस से वंचित रह गई। अर्थात् वे लोग उसे स्वीकार नहीं करेंगे तथा विरोधी हो जाएँगे। और इस लाभ से वंचित रह जाएँगे।★ हाफ़िज़

★**हाशिया -** मालूम होता है कि यह कश्फ़ उस समय का है जबकि यह लेखक अपनी आयु के प्रारंभिक समय में मौलवी अब्दुल्लाह साहिब को खै़रवी के स्थान पर जाकर मिला था और फ़ाल निकाला था कि मुझे खैर और अच्छाई मिली। तब अब्दुल्लाह साहिब को अपने लिए दुआ के बारे में कहा तो उन्होंने दोपहर के समय तीव्र गर्मी में घर में जाकर मेरे लिए दुआ की और मेरे बारे में अपना एक इल्हाम सुनाया और वह यह कि-

اَنْتَ مَوْلَانَا فَانْصُرْ نَا علَى الْقَوْمِ الْكَافِرِيْنَ

और जुहर के समय घर से वापस आकर मुस्कराते हुए मुझ से कहा कि ख़ुदा की मुझ से यह आदत न थी जो तुम्हारे मामले में प्रकट हुई और अपनी फ़ारसी भाषा में फ़रमाया कि इस इल्हाम से तो यह समझा जाता है कि सहाबा के रंग पर तुम्हारे साथ ख़ुदा की सहायता रहेगी। फिर मैं क़ादियाँ में आया तो एक पत्र डाक में भेजा जिसमें पुन: यही इल्हाम था और शायद कुछ और वाक्य भी थे। अत: मालूम होता है कि आदरणीय प्रशंसित मौलवी साहिब ने इसी आयोजन और तहरीक से क़ादियाँ में नूर उतरते देखा। अच्छा आदमी था ख़ुदा उस पर

मुहम्मद यूसुफ़ साहिब अब तक जीवित हैं। एक मज्लिस आयोजित करो और मुझे उसमें बुलाओ। फिर इन दोनों बुज़ुर्गों को ख़ुदा की क़सम देकर पूछो कि ये दोनों घटनाएँ उन्होंने वर्णन की हैं या नहीं और ये लोग तुम्हारी जमाअत में से हैं और मौलवी अब्दुल्लाह के मुरब्बी और उपकार करने वाले भी। अब बताओ कि तुम्हारी जान कैसे शिकंजे में आ गई और किस प्रकार सफाई से सिद्ध हो गया कि तुम ही झूठ गढ़ने वाले हो। ख़ुदा अपनी मख्लूक को तुम्हारे झूठों से अपनी शरण में रखे। आमीन।

**उसका कथन-** मिर्ज़ा की किताबें इस प्रकार के झूठ और बनाए हुए झूठों से भरी हुई है कि कोई ख़ुदा पर ईमान रखने वाला ऐसी दिलेरी नहीं कर सकता।

**मेरा कथन-** इस वर्णन का दूसरे शब्दों में परिणाम यह है कि अब्दुल्लाह गज़नवी ने ऐसे झूठे का नाम सच्चा और ख़ुदा की ओर से होने का रख कर एक ऐसे झूठ और झूठ बनाकर काम लिया है कोई ख़ुदा पर ईमान रखने वाला ऐसी दिलेरी नहीं कर सकता। अब सच कह हे मियाँ अब्दुल हक़ क्या कोई ख़ुदा पर ईमान रखने वाला ऐसी दिलेरी कर सकता है जो मियाँ अब्दुल्लाह ने की कि झूठे का नाम सच्चा और  आसमानी नूर रखा। ख़ुदा तआला तो झूठ गढ़ने वालों पर लानत भेजता है। तो जिस व्यक्ति ने ऐसा झूठा इल्हाम और कश्फ़ बनाया जो यह वर्णन किया कि मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी पर ख़ुदा तआला का नूर उतरा और मेरी सन्तान उस से वंचित रह गई। इसके बारे में आप लोगों का क्या फ़त्वा है। यह फ़त्वा अवश्य

रहमत उतारे। आमीन। (इसी से)

प्रकाशित करना चाहिए-

(अल अनआम-94) وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰی عَلَی اللّٰہِ کَذِبًا

आप तो यह रोना रोते थे कि नऊज़ुबिल्लाह मैंने झूठ बोला है। अब आप के इक़रार से यह सिद्ध हुआ कि अब्दुल्लाह ग़ज़नवी ख़ुदा पर कई बार झूठ बोलकर और ख़ुदा तआला पर झूठ बना कर इस दुनिया से गुज़र गया है और जो ख़ुदा पर झूठ बांधे उस से अधिक बुरा कौन हो सकता है-

مرا خواندی وخود بدام آمدی
نظر پختہ ترکن کہ خام آمدی

**उसका कथन-** तीन खुले झूठ सिद्ध करता हूं जो किसी ईमानदार बल्कि थोड़ी सी भी शर्म और हया वाले मनुष्य का काम नहीं।

**मेरा कथन-** हे शर्म और हया से दूर इस तेरे कथन से भी मैं कुछ अफ़सोस नहीं करता, क्योंकि पहले बेईमानों के ढंग और आदत को तूने पूरा किया। प्रत्येक नबी और ख़ुदा का मामूर और सच्चा तथा सत्यनिष्ठ जो संसार में आया उसे दुर्भाग्यशाली काफ़िरों ने झूठा कहा बल्कि महा झूठा नाम रखा। यदि तूने सारी दौड़ धूप करके तीन स्थान प्रस्तुत किए जिन में तेरे ग़लत विचार में मैंने झूठ बोला है और वे तीन स्थान ये हैं, जिन का उत्तर देता हूं-

**उसका कथन-** प्रथम झूठ यह कि पृष्ठ-5, पंक्ति 20 और 21 में लिखा है। क्योंकि पवित्र क़ुर्आन में हज़रत मसीह के बारे में فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِىْ फ़रमाना और हदीसों में जैसा कि बुख़ारी में है उसके मायने اَمِتْنِی वर्णन करना।

**मेरा कथन-** इस मूर्ख ऐतराज करने वाले की इस पोच और

लच्चर इबारत का मतलब यह है कि सही बुख़ारी में इस जगह आयत

يٰعِيْسٰى اِنِّى مُتَوَفِّيْكَ

की तफ़सीर में यह कथन है कि متوفيك مميتك यह कथन नहीं कि لَمَّا تَوَفَّيْتَنِىْ ـ اَمتّنى इसका उत्तर यह है कि यहां मेरे कलाम का मूल उद्देश्य हदीसों का सार मतलब वर्णन करना है न यह कि किसी हदीस के ठीक-ठीक शब्द लिखना जैसा कि मेरे इस वाक्य के वर्णन करने से कि और हदीसों में अर्थात् बुख़ारी इत्यादि में। यह मेरा उद्देश्य समझा जाता है और इन्साफ करने वाले को मेरे कलाम पर विचार करने से सन्देह नहीं रहेगा कि यहां मेरा उद्देश्य केवल हदीसों का ख़ुलासा तथा कथनों का परिणाम लिखना है न कि इबारत का नक़ल करना। स्पष्ट है कि जो व्यक्ति उदाहरणतया ऐसी बीस हदीसों के मायने वर्णन करने लगता है जो भिन्न-भिन्न शब्दों में आई हैं और परिणाम एक है तो उसको उन हदीसों का निचोड़ लिखना पड़ता है ताकि वह शब्द सब पर चरितार्थ हो और मूल उद्देश्य की तफ़सीर करने वाला हो जाए। इसी प्रकार मूल उद्देश्य बुख़ारी इत्यादि का امتّنى है जो उल्लेखनीय था और यद्यपि, विशेष तौर पर बुख़ारी का शब्द مميتك ـ متوفيك है, परन्तु मेरे वर्णन में केवल बुख़ारी के शब्दों पर ही निर्भर नहीं रखा गया। सामान्य तौर पर हदीसों की बहस है बुख़ारी हो या बुख़ारी के अतिरिक्त। फिर यह भी स्पष्ट है कि स्वयं बुख़ारी ने इसी स्थान में इस आयत अर्थात् فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِىْ को दोनों आयतों को परस्पर सहायता करने के उद्देश्य से वर्णन करके बता दिया है कि यही तफ़्सीर فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِىْ की है और यहां वही तर्क इब्ने अब्बास के कथन का

सही है। जैसा कि اِنِّی مُتَوَفِّیْكَ में सही है। इस स्थान पर यह याद रहे कि ख़ुदा तआला जो सबसे अधिक सच्चा है उसने अपने कलाम में सच के दो प्रकार बताए हैं। एक सच ज़ाहिरी कथनों की दृष्टि से। दूसरा सच तावील और परिणाम की दृष्टि से। प्रथम प्रकार के सच का उदाहरण यह है कि जैसे अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि ईसा मरयम का बेटा था। इब्राहीम के दो बेटे थे इस्माईल और इस्हाक़। क्योंकि प्रत्यक्ष घटनाएं तावील के बिना यही हैं। सच के दूसरे प्रकार का उदाहरण यह है कि जैसे पवित्र क़ुर्आन में काफ़िरों या पहले मोमिनों के वाक्य कुछ परिवर्तित करके वर्णन किए गए हैं और फिर कहा गया है कि यह उन्हीं के शब्द हैं और या जो किस्से तौरात के वर्णन किए गए हैं और उनमें बहुत सा परिवर्तन है। क्योंकि स्पष्ट है कि जिस चमत्कार की शैली और तरीके और सुबोध वाक्यों और रुचिकर रूपकों में क़ुर्आन की इबारतें हैं इस प्रकार के सुबोध वाक्य काफ़िरों के मुंह से हरगिज़ नहीं निकले थे और न यह क्रम था। बल्कि यह किस्सों का क्रम जो क़ुर्आन में है तौरात में क्रमबद्ध रूप से हरगिज़ नहीं है। हालांकि फ़रमाया है-

إِنَّ هَذَا لَفِى الصُّحُفِ الْأُولَى صُحُفِ إِبْرَاهِيمَ وَمُوسَى

(सूरह अलआला-19-20)

और यदि ये वाक्य अपने रूप और क्रम तथा सीग़ों की दृष्टि से वही हैं जो उदाहरणतया काफ़िरों के मुंह से निकले थे तो इस से क़ुर्आन का चमत्कार पूर्ण होना ग़लत होता है क्योंकि इस स्थिति में वह सरसता काफ़िरों की हुई न कि क़ुर्आन की। और यदि वही नहीं तो तुम्हारे कथनानुसार झूठ अनिवार्य होता है, क्योंकि उन लोगों ने

तो और -और शब्द, और-और क्रम और-और सीग़े अपनाए थे तथा जिस प्रकार متوفيك और تَوَفَّيْتَنِی दो भिन्न-भिन्न सीग़े हैं। इसी प्रकार सैकड़ों स्थान पर उन के सीग़े और क़ुर्आन के सीग़े परस्पर भिन्नता रखते थे। उदाहरणतया तौरात में यूसुफ़ का एक किस्सा है निकाल कर देख लो और फिर पवित्र क़ुर्आन की सूरह यूसुफ़ से उसकी तुलना करो तो देखो कि सीग़ों में कितनी भिन्नता और वर्णन में न्यूनाधिकता है बल्कि कुछ स्थान पर देखने में मायनों में भी भिन्नता है। ऐसा ही क़ुर्आन ने वर्णन किया है कि इब्राहीम का बाप आज़र था, परन्तु अधिकांश व्याख्या कार लिखते हैं कि उस का बाप कोई और था न कि आज़र। अब हे मूर्ख! शीघ्र तौब: कर कि तूने पादरियों की तरह क़ुर्आन पर भी आक्रमण कर दिया। सही बुख़ारी की पहली हदीस है कि

اِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِالنِّيَّات

इसी प्रकार जब हमने देखा कि इस स्थान में समस्त हदीसों का संयुक्त उद्देश्य यह है कि تَوَفَّيْتَنِی के मायने हैं امتّنی तो सही नीयत से साथ इसका वर्णन कर दिया। इस शैली के वर्णन को झूठ से क्या अनुकूलता। और झूठ को इस से क्या अनुकूलता। क्या यह सच नहीं कि इमाम बुख़ारी का उद्देश्य इस वाक्य مميتك-متوفيك से यह सिद्ध करना है कि لَمَّا تَوَفَّيْتَنِی के मायने हैं اَمَتَّنِی और इसीलिए वह दो अलग-अलग स्थानों की दो आयतें एक स्थान पर वर्णन करके तथा एक दूसरे को सहायता के तौर पर दिखाता है कि इब्ने अब्बास का आशय यह था कि لَمَّا تَوَفَّيْتَنِی के मायने اَمَتَّنِی हैं। इसलिए हमने भी बतौर तावील और अंजाम यह कह दिया कि

हदीसों की दृष्टि से لَمَّا تَوَفَّيْتَنِى के मायने اَمَتَّنِى है।★भला यदि यह सही नहीं है तो तू ही बता कि जब مُتوفّيك के मायने مميتك हुए तो इब्ने अब्बास के उस कथन की दृष्टि से لَمَّا تَوَفَّيْتَنِى के क्या मायने हुए? क्या हमें अवश्य नहीं कि हम لَمَّا تَوَفَّيْتَنِى के मायने ऐसी हदीस की दृष्टि से करें जैसी कि हदीस की दृष्टि से مُتوفّيك के मायने किये गए हैं। यदि हम इस बात के लिए अधिकृत हैं कि एक ही स्थान की दो आयतों की तफ़्सीर को बतौर प्रमाण प्रस्तुत कर दें तो इसमें क्या झूठ हुआ कि हम ने लिख दिया कि हदीस की दृष्टि से لَمَّا تَوَفَّيْتَنِى के मायने لَمَّا تَوَفَّيْتَنِى हैं। जबकि تَوَفِّى के एक सीग़े में हदीस की दृष्टि से यह प्राप्त हो चुका कि इस के मायने मृत्यु देना है तो वही तर्क दूसरे सीग़े में भी जारी करना हदीस के तर्क से बाहर क्यों समझा जाता है और यह कहना कि हम उसी कथन को हदीस कहेंगे जिसका प्रमाण आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक पहुंचता हो। अर्थात वह मर्फ़ूअ मुत्तसिल हो यह और मूर्खता है। क्या जो मुन्कते हदीस हो और मर्फ़ूअ मुत्तसिल न हो वह हदीस नहीं कहलाती। शिया मज़हब के इमाम और मुहद्दिस किसी हदीस को आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक नहीं पहुंचाते तो क्या उन अखबार का नाम हदीस नहीं रखते और स्वयं सुन्नियों के मुहद्दिसों ने कुछ ख़बरों को बनावटी कहकर फिर भी उन का

★**हाशिया -** इस प्रकार के कथन पवित्र क़ुर्आन में सैकड़ों पाए जाते हैं कि बात करने वाले के तो शब्द और शैली और थी, परन्तु ख़ुदा तआला ने पृथक शैली में वर्णन किया और फिर कहा कि यह उसी का कथन है। अफ़सोस कि मेरी कंजूसी के लिए ये लोग अब पवित्र क़ुर्आन पर भी ऐतराज़ करने लगे। अब तो ख़तरनाक लक्षण प्रकट हो गए। ख़ुदा अपनी कृपा करे। आमीन (इसी से)

नाम हदीस रखा है और हदीस को कई प्रकार पर विभाजित करके सब का नाम हदीस ही रख दिया है। अफ़सोस कि तुम लोगों की नौबत कहाँ तक पहुंच गई है कि उन बातों का नाम भी झूठ रखते हो जिस शैली को पवित्र क़ुर्आन ने अपनाया है और केवल शरारत से ख़ुदा के पवित्र कलाम पर प्रहार करते हो। स्पष्ट है कि यदि उदाहरण के तौर पर कोई यह कहे कि मैंने पुलाव की सारी रकाबी खाली तो उसको यह नहीं कह सकते कि उसने झूठ बोला है और झूठ यह कि उस ने चावल खाए हैं रकाबी को तोड़ कर नहीं खाया और जब कि हदीस के स्पष्ट आदेशों का तर्क पूर्णता का लाभ देता है तो यह कहना कि हदीस की दृष्टि से لَمَّاتَوَفَّيتَنِى के मायने لَمَّا اَمَّتَنِى हैं अर्थात इस आधार पर कि مميتك-متوفيك आ चुका है। इसमें कौन सा झूठ और असत्य है परन्तु ऐसे मूर्ख को कौन समझाए जो अपनी मूर्खता के साथ द्वेष का ज़हर भी मिला हुआ रखता है। परन्तु अच्छा है कि जैसा कि ये लोग हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की ओर तीन झूठ मंसूब करते हैं ऐसा ही तीन झूठ मेरी ओर भी सम्बद्ध किए। हम इस इब्राहीमी समानता पर गर्व करते हैं। परन्तु इन लोगों के झूठ और इफ़्तिरा (झूठ गढ़ना) को उनके मुंह पर मारते हैं।

**उसका कथन-** दूसरा झूठ इसी पृष्ठ पंक्ति 23,24 में लिखा है। पवित्र कुरआन का यह कहना कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पहले कोई नबी ऐसा नहीं गजरा जो मृत्यु नहीं पा गया। यह भी सर्वथा झूठ है। पवित्र कुरआन में केवल خلت من قبلهِ الرُّسل मौजूद है। जिसके मायने यह हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पहले पैग़म्बर गुज़रे।

**मेरा कथन-** क्या गुज़रना मरने के अतिरिक्त कोई और चीज़ भी है। जो व्यक्ति संसार से गुज़र गया उसी को तो कहते हैं कि मर गया। शेख़ सादी फ़रमाते हैं-

پدر چوں دور عمرش منقضی گشت
مرا ایں یک نصیحت داد بگذشت

अब बताओ कि इस स्थान पर بگزشت के क्या मायने हैं। क्या यह कि शेख़ सादी का बाप जीवित पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर चला गया था या यह कि मर गया था। हे प्रिय! क्या इन अधम तावीलों से सिद्ध हो जाएगा कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पार्थिव शरीर के साथ जीवित आकाश पर चले गए थे। समस्त संसार का यह मुहावरा है कि जब उदाहरणतया यह कहा जाए कि अमुक बीमार गुज़र गया तो कोई भी यह मायने नहीं करता कि वह आकाश पर पार्थिव शरीर के साथ चढ़ गया। अरबी में भी गुज़रना मरने के अर्थों में एक प्राचीन मुहावरा है। अत: एक विद्वान के बारे में जो किसी पुस्तक को लिखना चाहता था और लिखने से पहले मर गया।किसी का यह पुराना शैर है-

ولم يتفق حتّى مضى بسبيله
وكم حسرات فى بطون المقابر

अर्थात् उस विद्वान को उस पुस्तक का लिखने का संयोग न हुआ यहां तक कि गुज़र गया और कब्रों के पेट में बहुत से हसरतें हैं। अर्थात् अधिकतर लोग इससे पूर्व कि वे अपने इरादे पूरे करें मर जाते हैं और हसरतों को कब्रों में साथ ले जाते हैं।

अब देखो कि इस स्थान पर भी गुज़रना मरने के अर्थों में है

और यदि यह कहो कि यह अर्थ किस तफ़्सीर वाले ने लिखे हैं तो इसका यह उत्तर है कि प्रत्येक अन्वेषक मुफ़स्सिर (व्याख्याकार) जो बुद्धि, विवेक और विवेक विद्या से परिचित है यही अर्थ लिखता है। देखो तफ़्सीर मज़्हरी पृष्ठ 485

قدخلت من قبله الرُّسل

आयत के अन्तर्गत مصنت وماتت من قبله الرُّسل अर्थात् पहले नबी संसार से गुज़र गए और मर गए तथा الف لام अलिफ़ लाम से इस बात की ओर संकेत है कि उनमें से कोई मृत्यु से ख़ाली नहीं रहा। इसी प्रकार तब्सीरुर्रहमान व तैसीरुलमनान लेखक शेख़ अल्लामा ज़ैनुद्दीन अली अल महाइमी आयत قدخلت के अन्तर्गत लिखा है-

قد خلت منهم من مات ومنهم من قتل فلا منافات بين الرسالة والقتل والموت

(देखो पृष्ठ 177 जिल्द प्रथम तब्सीरुर्रहमान)

अर्थात् पहले अंबिया संसार से इस प्रकार गुज़र गए कि कोई मर गया और कोई क़त्ल किया गया। तो नुबुव्वत, मौत और क़त्ल में कुछ खण्डन करना नहीं। इसी प्रकार शेख़ अल्लामा सय्यद मुईनुद्दीन इब्ने शेख़ सफ़ीउद्दीन की तफ़्सीर जामिउलबयान पृष्ठ 21 में आयत

قدخلت من قبله الرُّسل

के अन्तर्गत लिखा है

قد خلت من قبله الرسل بالموت او القتل فيخلو محمد صلى الله عليه وسلم ايضًا

अर्थात् समस्त नबी जो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

से पहले थे मृत्यु के साथ या क़त्ल के साथ संसार से गुज़र गए, ऐसा ही आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी संसार से गुज़र जाएंगे। इसी प्रकार हाशिया ग़ायतुल क़ाज़ी व किफ़ायतुर्राज़ी अला तफ़्सी रिल बैज़ावी जिल्द-3, पृष्ठ-68 कथित स्थान के संबंध में यह लिखा है-

ليسَ (رسولنا صلى الله عليه وسلم) متبرئً عن الهلاك كسائر الرسل و يخلو كما خلوا۔

अर्थात् हमारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मृत्यु से अपवाद नहीं है बल्कि जैसा कि उन से पहले समस्त पैग़म्बर मर चुके हैं वह भी मरेंगे। और जैसा कि वे इस संसार से गुज़र गए वह भी गुज़र जाएँगे। ऐसा ही तफ़्सीर जमल में जिसका दूसरा नाम फ़ुतुहात-ए-इलाहिय: है। अर्थात् जिल्द-1, पृष्ठ-336 में आयत وما محمد قدخلت की तफ़्सीर के अन्तर्गत यह लिखा है-

كانهم اعتقدوا انه ليس كسائر الرسل في انه يموت كما ماتوا

अर्थात् कुछ सहाबा[रज़ि०] को जैसे यह गुमान हुआ था कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दूसरे नबियों की तरह नहीं मरेंगे बल्कि जीवित रहेंगे। अत: फ़रमाया कि वह भी मरेगा जैसा कि पहले समस्त नबी मर गए। ऐसा ही तफ़्सीर साफ़ी जिल्द 1 में कथित आयत के अन्तर्गत लिखा है-

فسيخلوا كما خلوا بالموت او القتل

अर्थात् हज़रत सय्यिदिना मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी संसार से ऐसा ही गुज़र जाएगा जैसा कि दूसरे नबी मृत्यु या क़त्ल के साथ संसार से गुज़र गए। अब स्पष्ट है कि इन समस्त तफ़्सीर वालों ने शब्द خلت के मायने ماتت ही किए हैं। अर्थात्

इस आयत के यही मायने किए हैं कि जैसे पहले समस्त अंबिया अलैहिस्सलाम मृत्यु पा गए हैं ऐसा ही आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी मृत्यु पाएँगे। अब देखो कि हज़रत मसीह की मृत्यु पर यह कितना स्पष्ट सबूत है जो समस्त तफ़्सीरों वाले सहमत होकर कह रहे हैं कि संसार में पहले जितने नबी आए सब मृत्यु पा चुके हैं। इसके अतिरिक्त प्रत्येक ईमानदार का कर्तव्य है कि इस स्थान में जिन अर्थों की ओर स्वयं महाप्रतापी ख़ुदा ने संकेत किया है उन्हीं अर्थों को सही समझे और उसके विपरीत अर्थों को टेढ़ापन और नास्तिकता विश्वास करे और यह बात अत्यन्त स्पष्ट और सूर्य से भी अधिक प्रकट है कि अल्लाह तआला ने आयत

قَدۡ خَلَتۡ مِنۡ قَبۡلِهِ الرُّسُلُ (आले इमरान-145)

की तफ़्सीर में स्वयं ही फरमा दिया है-

اَفَاۡٮِٕنۡ مَّاتَ اَوۡ قُتِلَ (आले इमरान-145)

तो इस सम्पूर्ण आयत के ये अर्थ हुए कि पहले समस्त नबी इस संसार से मृत्यु या क़त्ल से गुज़र चुके हैं। तो यदि यह नबी भी उन्हीं की तरह मृत्यु या क़त्ल से गुज़र जाए तो क्या तुम धर्म से फिर जाओगे। इस स्थान पर यह नुक्ता याद रखने योग्य है कि ख़ुदा तआला ने इस स्थान में संसार से गुज़र जाने के दो ही प्रकार के मायने ठहराए हैं। एक यह कि मृत्यु के द्वारा حتف الف अर्थात् स्वाभाविक मृत्यु से मनुष्य मर जाए और दूसरे यह कि मारा जाए अर्थात् क़त्ल किया जाए। अत: ख़ुदा तआला ने خلت के शब्द को मृत्यु या क़त्ल में घेर दिया है। तो स्पष्ट है कि यदि कोई तीसरा प्रकार भी ख़ुदा तआला के ज्ञान में होता तो خلت के अर्थों को पूर्ण करने के लिए

उसको भी वर्णन करता। उदाहरणतया यह कहता

اَفَاِئِنْ مات او قُتل او رُفع الی السماء بجسمہ کما رُفع عیسٰی انقلبتم علٰی اعقابکم

जिसका अनुवाद यह है कि समस्त नबी इस से पहले गुज़र चुके हैं। तो यदि यह नबी भी मर जाए या क़त्ल किया जाए या ईसा की तरह शरीर के साथ आकाश पर उठाया जाए, तो क्या तुम इस धर्म से फिर जाओगे। अब हे प्रिय! क्या तू ख़ुदा पर ऐतराज़ करेगा कि वह इस तीसरे प्रकार का वर्णन करना भूल गया और केवल दो प्रकार वर्णन किए। परन्तु बुद्धिमान ख़ूब जानते हैं कि शब्द خلت जो एक व्याख्या चाहने वाला शब्द था उसकी व्याख्या केवल मृत्यु या क़त्ल से करना इस बात पर ठोस तौर पर संकेत करता है कि ख़ुदा तआला के नज़दीक इस स्थान में خلت के मायने मृत्यु या क़त्ल हैं और कुछ नहीं। यह एक ऐसी निश्चित बात है कि इस से इन्कार करना मानो ख़ुदा के आज्ञापालन से बाहर होना तथा उस पर झूठ बांधना है। जबकि ख़ुदा तआला ने इसी आयत में अपने ही मुंह से वर्णन कर दिया कि خلت के मायने मरना या क़त्ल किया जाना है। तो इस के विपरीत बोलना बहुत बड़ा झूठ और एक बड़ा झूठ गढ़ना है और छोटे गुनाहों में से नहीं है बल्कि बड़ा गुनाह है। तो जबकि ख़ुदा तआला के नज़दीक خلت के अर्थ दो में ही सीमित ठहरे अर्थात् मरना या क़त्ल किए जाना, तो इस से अधिक झूठ गढ़ना तथा झूठ क्या होगा कि जिस प्रकार नसारा ने अकारण हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को ख़ुदा तआला का बेटा ठहरा दिया। इसी प्रकार अकारण तर्क एवं स्पष्ट प्रमाण के बिना خلت के अर्थों

में पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर उठाए जाना शामिल समझा जाए। हां इस स्थान पर स्वाभाविक तौर पर यह प्रश्न पैदा होगा कि जब अरबी शब्दकोश के विद्वानों ने भी خلت के अर्थ यह नहीं लिखे कि कोई मनुष्य जीवित पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर चला जाए। तो क्या आवश्यकता थी कि ख़ुदा तआला ने اَفَاۡئِنۡ مَّاتَ اَوۡ قُتِلَ के साथ शब्द خلت की व्याख्या की। तो इसका उत्तर यह है कि ख़ुदा तआला जानता था कि फैज आ'वज के युग में خلت के यह अर्थ भी किए जाएँगे कि हज़रत मसीह को पार्थिव शरीर के साथ जीवित आसमान पर पहुंचा दिया गया है। इसलिए इस व्याख्या से अग्रिम सुरक्षा के तौर पर पहले से ही इन दूषित विचारों का खण्डन कर दिया। अब इस समस्त छान-बीन के अनुसार आप समझ सकते हैं कि मैंने इन अर्थों में कोई झूठ नहीं बोला। बल्कि आप नाराज़ न हों। आप स्वयं कुरआन के अर्थ छोड़ने के कारण यह बुरा झूठ बोला है। मैं आपको एक हज़ार रुपया बतौर इनाम देने के लिए तैयार हूं। यदि आप पवित्र कुरआन की किसी आयत या किसी सुदृढ़ या कमज़ोर हदीस या बनावटी हदीस या किसी सहाबी का कथन या असभ्यता के समय के भाषणों अथवा दीवानों (पुस्तकों) तथा प्रत्येक प्रकार के शे'रों या इस्लामी फ़सीहों की किसी पद्य या गद्य से यह सिद्ध कर सकें कि خلت के अर्थों में यह भी सम्मिलित है कि कोई व्यक्ति पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर चला जाए। ख़ुदा तआला का पवित्र कुरआन में पहले خلت का वर्णन करना और फिर ऐसी इबारत में जो सरल-सुबोध भाषा शैली के नियमों तथा तफ़्सीर के अर्थों के स्थान में है केवल मरना या

क़त्ल किए जाना वर्णन करना। क्या मोमिन के लिए यह इस बात पर ठोस तर्क नहीं है कि خلت के अर्थ इस स्थान में दो ही हैं। अर्थात् मरना या क़त्ल किए जाना।

अब ख़ुदा की गवाही के बाद और किसकी गवाही की आवश्यकता है अल्हम्दुलिल्लाह, पुनः अल्हम्दुलिल्लाह कि इसी स्थान में ख़ुदा तआला ने मेरी सच्चाई की गवाही दे दी और वर्णन कर दिया कि خلت के अर्थ मरना या क़त्ल किए जाना है। आपने तो इस स्थान में अपने इस विज्ञापन में मेरे बारे में यह इबारत लिखी है कि ऐसा झूठ बोला है कि किसी ईमानदार बल्कि थोड़ी शर्म और लज्जा के आदमी का काम नहीं। परन्तु यह भी ख़ुदा तआला का एक महान निशान है कि वही झूठ कुरआन की गवाही से आप पर सिद्ध हो गया। अब बताइए कि मैं आपके बारे में क्या कहूँ। आप ने अकारण जल्दबाज़ी करके मेरा नाम झूठ बोलने वाला रखा, परन्तु मैं नहीं चाहता कि बुराई का उत्तर बुराई के साथ दूं। बल्कि यदि इस्लामी शरीअत में झूठ बोलना हराम (अवैध) और गुनाह न होता तो मैं आपके कज़्ज़ाब (महा झूठा) कहने के बदले में आपको सिद्दीक़ (महा सत्यवादी) कहता तथा इस के बदले में कि आप ने केवल झूठ बोलकर मुझे अपमानित और पराजित ठहरा दिया आप को सम्माननीय और विजयी के नाम से पुकारता।

**उसका कथन-** तीसरा झूठ उसी पृष्ठ की 27वीं पंक्ति में समस्त सहाबा का हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम और समस्त नबियों की मृत्यु पर इज्मा (सर्व सम्मति) हो जाना यह भी सर्वथा झूठ है। सहाबा किराम तो लाख से भी अधिक होंगे, सब से सबूत देना तो कठिन है।

**मेरा कथन-** यहां मुझे आप लोगों की हालत पर रोना आता है कि ख़ुदा ने कैसे बुद्धि, ज्ञान और ईमानदारी को सीनों में से छीन लिया। क्या इसी ज्ञान की पूँजी पर आप लोग मौलवी कहलाते हैं और एक दूसरे का नाम उलेमा-ए-किराम और महान सूफ़िया रखते हैं। हे दयनीय मूर्ख! यह बात वास्तव में सच है कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम और समस्त पहले नबियों की मृत्यु के बारे में आदरणीय सहाबा का इज्मा हो गया था और जिस प्रकार अबू बक्र की ख़िलाफ़त पर इज्मा (सर्व सम्मति) पाया गया है उसी प्रकार का बल्कि उससे अधिक श्रेष्ठ एवं उच्च स्तर का इज्मा यह था और यदि इस इज्मा पर कोई प्रतिप्रश्न बहस होता है तो इस से अधिक प्रतिप्रश्न कथित ख़िलाफ़त के इज्मा पर होगा। वास्तव में यह इज्मा अबू बक्र के इज्मा से बहुत बढ़कर है क्योंकि इसमें कोई कमज़ोर कथन भी वर्णित नहीं जिस से सिद्ध हो कि किसी सहाबी ने हज़रत अबू बक्र का विरोध किया या असमंजस किया। अर्थात् जब हज़रत अबू बक्र ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु पर बतौर तर्क यह आयत पढ़ी कि-

مَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ أَفَإِنْ مَاتَ
أَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلَىٰ أَعْقَابِكُمْ (आले इमरान-145)

जिसका अनुवाद यह है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम केवल एक रसूल है और उसमें कोई भाग मा'बूद (उपास्य) होने का नहीं और इससे पहले सब रसूल संसार से गुज़र चुके हैं अर्थात् मर चुके हैं। तो ऐसा ही यदि यह भी मरकर या क़त्ल होकर संसार से गुज़र गया तो क्या तुम धर्म से विमुख हो जाओगे। तो इस आयत

के सुनने के पश्चात् किसी एक सहाबी ने भी विरोध नहीं किया और न उठ कर यह कहा कि आप का यह तर्क दोषपूर्ण एवं अपूर्ण है। क्या आप को मालूम नहीं कि कुछ नबी पार्थिव शरीर से साथ जीवित पृथ्वी पर मौजूद हैं। जैसे इल्यास, ख़िज्र और कुछ आकाश पर जैसे इदरीस और ईसा। तो फिर इस आयत से आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु अवश्य क्यों सिद्ध हो, तथा क्यों वैध नहीं कि वह भी जीवित हों। बल्कि समस्त सहाबा ने इस आयत को सुनकर पुष्टि की और सब के सब इस परिणाम तक पहुँच गए कि समस्त नबियों की तरह आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का भी मरना आवश्यक था। तो यह इज्मा बिना विलम्ब और बिना संकोच के हुआ। परन्तु वह इज्मा जो हज़रत अबू बकर की ख़िलाफ़त पर माना जाता है उसमें कुछ सहाबा की ओर से बैअत करने में कुछ विलम्ब और संकोच भी हुआ था, यद्यपि कुछ दिनों के पश्चात् बैअत कर ली। इस आज़मायश में स्वयं हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो भी ग्रस्त हो गए थे परन्तु पहले नबियों की मृत्यु पर किसी सहाबी को हज़रत अबू बकर सिद्दीक के भाषण को सुनने के बाद कोई विपत्ति सामने नहीं आई तथा उसे स्वीकार करने में कुछ भी विलम्ब और संकोच किया बल्कि सुनते ही मान गए। इसलिए इस्लाम में वह पहला इज्मा है जो अविलम्ब खुले दिल के साथ हुआ। सारांश यह कि निस्सन्देह स्पष्ट आयतों की दृष्टि से हमारा यह विश्वास है कि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम का पहले समस्त नबियों की मृत्यु पर जिसमें हज़रत मसीह भी सम्मिलित हैं इज्मा हो गया था, बल्कि हज़रत मसीह इस इज्मा का प्रथम

लक्ष्य थे। नीचे हदीस के स्पष्ट आदेशों की दृष्टि से सबूत लिखता हूं ताकि मालूम हो कि हम दोनों में से कौन व्यक्ति ख़ुदा तआला से डर कर सच पर स्थापित है और कौन व्यक्ति निर्भीकतापूर्वक झूठ बोलता और स्पष्ट आयतों को छोड़ता है।

स्पष्ट हो कि इस बारे में सही बुख़ारी में जो सर्वाधिक सही पुस्तक कहलाती है निम्नलिखित इबारतें हैं-

عن عبد اللّٰہ بن عباس ان ابابکر خرج وعمر یکلم النّاس فقال اجلس یا عمر فابٰی عمر ان یجلس فاقبل الناس الیہ وترکوا عمر فقال ابوبکراما بعد من منکم یعبد محمدًا فان محمدًا قد مات ومن کان منکم یعبد اللّٰہ فان اللّٰہ حیٌّ لا یموت قال اللّٰہ

وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ۔ (आले इमरान-145)

الی الشاکرین وقال واللّٰہ کانّ الناس لم یعلموا ان اللّٰہ انزل ھذہ الاٰیۃ حتّی تلاھا ابوبکر فتلقاھا منہ الناس کُلّھم فما اسمع بشرا من الناس الّا یتلوھا ان عمرًا قال واللّٰہ ماھو الّا ان سمعتُ ابابکر تلاھا فعقرت حتّی ما یقلنی رجلا ی وحتّی اھویت الی الارض حتّی سمعتہ تلاھا انّ النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم قد مات

अर्थात् इब्ने अब्बास से रिवायत है कि अबू बक्र निकला (अर्थात् आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु वाले दिन) और उमर लोगों से कुछ बातें कर रहा था (अर्थात् कह रहा था कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु नहीं हुई बल्कि जीवित हैं) तो अबू बक्र ने कहा कि हे उमर बैठ जा। परन्तु उमर ने

बैठने से इन्कार किया, तो लोग अबू बक्र की ओर ध्यान देने लगे और उमर को छोड़ दिया। तो अबू बक्र ने कहा कि ख़ुदा की प्रशंसा और स्तुति के पश्चात् स्पष्ट हो कि जो व्यक्ति तुम में से मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इबादत करता है उसको मालूम हो कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मृत्यु पा गया और जो व्यक्ति तुम में से ख़ुदा की इबादत करता है तो ख़ुदा जीवित है जो नहीं मरेगा। और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु पर तर्क यह है कि ख़ुदा ने फ़रमाया है कि मुहम्मद केवल एक रसूल है और उस से पहले समस्त रसूल इस दुनिया से गुज़र चुके हैं अर्थात् मर चुके हैं और हज़रत अबू बक्र ने الشاكرين तक यह आयत पढ़कर सुनाई।★ रावी ने कहा ख़ुदा की क़सम जैसे लोग इससे बेख़बर थे कि यह आयत भी ख़ुदा ने उतारी है। अबू बक्र के पढ़ने से उनको पता चला। तो इस आयत को समस्त सहाबा ने अबू बक्र से सीख लिया और कोई भी सहाबी या ग़ैर सहाबी शेष न रहा जो इस आयत को नहीं पढ़ता था। उमर ने कहा कि ख़ुदा की क़सम मैंने यह आयत अबू बक्र से ही सुनी जब उसने पढ़ी, तो मैं उसके सुनने से ऐसा बेसुध और ज़ख्मी हो गया हूं कि मेरे पैर

---

★**हाशिया :-** इस आयत का अगला वाक्य अर्थात् افان مات اوقتل स्पष्ट बता रहा है कि ख़ुदा तआला के नज़दीक गुज़र जाना केवल दो प्रकार पर है स्वाभाविक मृत्यु द्वारा या क़त्ल द्वारा। ख़ुदा तआला ने इस आयत में यह नहीं कहा कि गुज़र जाना इस प्रकार भी होता है कि कोई व्यक्ति जीवित पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर चला जाए। तो जबकि ख़ुदा तआला ने गुज़र जाने की व्याख्या शब्द افان مات اوقتل से स्वयं कर दी और उस को सीमित कर दिया तो इसके बाद न मानना किसी सदाचारी मोमिन का काम नहीं। (इसी से)

मुझे उठा नहीं सकते और मैं उस समय से पृथ्वी पर गिरा जाता हूं जब से कि मैंने यह आयत पढ़ते सुना और यह कलिमा कहते सुना कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मृत्यु पा गए। इस स्थान पर कुस्तलाफी शरह बुख़ारी की यह इबारत है-

وعمر بن الخطاب يكلّم النّاس يقول لهم مامات رسُول الله صلّى الله عليه وسلم ------ ولا يموت حتّى يقتل المنافقين

अर्थात् हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो लोगों से बातें करते थे और कहते थे कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु नहीं हुई। और जब तक मुनाफ़िकों (कपटाचारियों) को क़त्ल न कर लें मृत्यु नहीं पाएँगे। और 'मिलल-व-नहल शहरिस्तानी'★ में इस क़िस्से के संबंध में यह इबारत है-

قال عمر بن الخطاب من قال ان محمدا مات فقتلته بسيفى هٰذا وانما رُفع الى السماء كمارُفع عيسى ابن مريم عليه السلام وقال ابوبكر بن قحافة من كان يعبد محمدًا فان محمدًا قدمات ومن كان يعبد اِلٰه محمدٍ فانه حيّ لا يموت وقرء هذه الاٰية

وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ اَفَاۡئِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ ؕ (आले इमरान-145)

فرجع القوم الى قوله۔

(देखो मिलल नहल जिल्द-3)

---

★الملل لابى الفتح الامام محمد بن عبد الكريم الشهرستانى المتوفّٰى قال التاج السبكى فى طبقاته كتاب الملل والنحلِ للشهرستانى هو عندى خير كتاب فى هٰذا الباب صفحه۹

**(अनुवाद)-** यह है कि उमर ख़त्ताब कहते थे कि जो व्यक्ति यह कहेगा कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मृत्यु पा गए तो मैं अपनी इसी तलवार से उसको क़त्ल कर दूँगा, बल्कि वह आकाश पर उठाए गए हैं जैसा कि ईसा इब्ने मरयम उठाए★ गए और अबू बक्र ने कहा कि जो व्यक्ति मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इबादत करता है तो वह अवश्य मृत्यु पा चुके हैं और

**★हाशिया :-** हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो का यह कहना कि जो व्यक्ति हज़रत सय्यदिना मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में यह शब्द मुंह पर लाएगा कि वह मर गए हैं तो मैं उसको अपनी इसी तलवार से क़त्ल कर दूँगा। इससे मालूम होता है कि हज़रत उमर को अपने किसी विचार के कारण आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन पर बहुत अतिशयोक्ति हो गयी थी और उस वाक्य को कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मर गए कुफ्र का वाक्य और धर्म से विमुखता समझते थे। ख़ुदा तआला हज़ारों अच्छे प्रतिफल अबू बक्र को प्रदान करे कि उन्होंने शीघ्र ही इस फित्न: को दूर कर दिया और कुरआन के स्पष्ट आयत को प्रस्तुत करके बता दिया कि पहले समस्त नबी मर गए हैं और जैसा कि उन्होंने मुसैलिमा कज्ज़ाब और अस्वद अन्सी इत्यादि को क़त्ल किया, वास्तव में इस व्याख्या से भी बहुत से फैज आ'वज के कज्ज़ाबों (झूठों) को समस्त सहाबा के इज्मा से क़त्ल कर दिया। जैसे चार कज्ज़ाब नहीं बल्कि पांच कज्ज़ाब मारे। हे मेरे ख़ुदा! उनकी जान पर करोड़ों रहमतें उतार। आमीन। यदि इस स्थान पर خَلَتْ के यह अर्थ किए जाएँ कि कुछ नबी जीवित आकाश पर जा बैठे हैं तो इस स्थिति में हज़रत उमर सही ठहरते हैं और यह आयत उनको हानिप्रद नहीं बल्कि उनकी समर्थक ठहरती है। परन्तु इस आयत का अगला वाक्य जो बतौर व्याख्या अर्थात् افان مات اوقتل जिस पर हज़रत अबू बक्र की नज़र जा पड़ी स्पष्ट कर रहा है कि इस आयत के यह अर्थ लेना कि समस्त नबी गुज़र

जो व्यक्ति मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ख़ुदा की इबादत करता है तो वह जीवित है, नहीं मरेगा। अर्थात् एक ख़ुदा ही में यह विशेषता है कि वह हमेशा जीवित है और शेष समस्त मानव जाति तथा जीवधारी इससे पहले मर जाते हैं कि उनके बारे में हमेशा रहने का गुमान हो। और फिर हज़रत अबू बक्र ने यह आयत पढ़ी जिसका अनुवाद यह है- कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) रसूल हैं और सब रसूल दुनिया से गुज़र गए। क्या यदि वे मृत्यु पा गए या क़त्ल किए गए तो तुम मुर्तद हो जाओगे। तब लोगों ने इस

**शेष हाशिया -** गए यद्यपि मृत्यु पाकर गुज़र गए या जीवित ही गुज़र गए यह दजल (धोखा), अक्षरांतरण तथा ख़ुदा के उद्देश्य के विरुद्ध एक बड़ा झूठ है। और ऐसे जान बूझ कर झूठ गढ़ने वाले जो न्याय के दिन से नहीं डरते और ख़ुदा की अपनी व्याख्या के विरुद्ध उलटे अर्थ करते हैं वे निस्सन्देह हमेशा की लानत के नीचे हैं। किन्तु हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को उस समय तक इस आयत की जानकारी नहीं थी और दूसरे कुछ सहाबा भी इसी ग़लत विचार में लिप्त थे और उस भूल और गलती में गिरफ़्तार थे जो कि मनुष्य होने की कमज़ोरी है और उनके दिल में था कि कुछ नबी अब तक जीवित हैं और फिर दुनिया में आएँगे। फिर क्यों आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके समान न हों। परन्तु हज़रत अबू बक्र ने पूरी आयत पढ़कर तथा افان مات اوقتل सुनाकर दिलों में बैठा दिया कि خَلَتْ के अर्थ दो प्रकार में ही घिरे हुए हैं-

(1)- हत्फ़ अनफ़ से मरना अर्थात् स्वाभाविक मृत्यु

(2)- क़त्ल किए जाना। तब विरोधियों ने अपनी ग़लती का इक़रार किया और समस्त सहाबा इस बात पर सहमत हो गए कि पहले सब नबी मर गए हैं। और افان مات اوقتل वाक्य का बड़ा ही प्रभाव पड़ा तथा सब ने अपने विरोधपूर्ण विचारों को त्याग दिया। इस पर ख़ुदा तआला की हर प्रकार की प्रशंसा। (इसी से)

आयत को सुनकर अपने विचारों से रुजू (लौटना) कर लिया। अब सोचो कि हज़रत अबू बक्र का यदि कुरआन से यह सिद्ध करना नहीं था कि समस्त नबी मृत्यु पा चुके हैं और यदि यह सिद्ध करना स्पष्ट और ठोस तर्क पर आधारित नहीं था तो वे साहब जो आप के कथनानुसार एक लाख से भी अधिक थे केवल काल्पनिक एवं सन्देहात्मक बात को कैसे स्वीकार कर गए और क्यों यह प्रमाण प्रस्तुत न किया कि हे हज़रत! आपका यह तर्क अपूर्ण है और आप के हाथ में कोई ठोस आयत का तर्क नहीं। क्या आप अब तक इस से अपरिचित हैं कि कुरआन ही आयत رَافِعُكَ اِلَيَّ में हज़रत मसीह का पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर जाना वर्णन करता है। क्या رَفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ आपने नहीं सुना फिर आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आकाश पर जाना आप के नज़दीक क्यों असंभव है। बल्कि सहाबा ने जो क़ुर्आन की रुचि से परिचित थे आयत को सुनकर और आयत خَلَتْ की व्याख्या افان مات او قتل वाक्य में पाकर तुरन्त अपने पहले विचार को छोड़ दिया। हाँ उनके दिल आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु के कारण बहुत शोक कुल और चूर हो गए तथा और उनके प्राण घट गए और हज़रत उमर ने फ़रमाया कि इस आयत के सुनने के बाद मेरी यह हालत हो गई कि मेरे शरीर को मेरे पैर उठा नहीं सकते तथा मैं पृथ्वी पर गिरा जाता हूं। सुब्हान अल्लाह कुरआन के लिए कैसे सौभाग्यशाली पूर्णत: समर्पित थे कि जब आयत में विचार करके समझ आ गया कि समस्त पहले नबी मृत्यु पा चुके हैं तब इसके अतिरिक्त कि रोना आरम्भ कर दिया और शोक से मर गए तथा कुछ

न कहा तब हस्सान बिन साबित ने यह शोक गीत (मर्सिय:) कहा-

كنتَ السواد لناظری فعمی علیك الناظر
من شاء بعدك فليمت فعليك كنت احاذرُ

अर्थात् तू मेरी आंख की पुतली था। मेरी आंखें तो तेरे मरने से अंधी हो गईं। अब तेरे बाद मैं किसी के जीवित रहने का क्या करूं। ईसा मरे या मूसा मरे निस्सन्देह मर जाएँ, मुझे तो तेरा ही ग़म था। याद रहे कि यदि हज़रत अबू बक्र की दृष्टि में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम मृत्यु से बाहर होते तो वह हरगिज़ इस आयत को बतौर प्रमाण प्रस्तुत न करते और यदि सहाबा को इस आयत के इन अर्थों में जो समस्त नबी मृत्यु पा चुके हैं कुछ असमंजस होता तो वह अवश्य कहते कि जिस हालत में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम जीवित पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर चले गए हैं तो फिर यह प्रमाण अपूर्ण है और क्या कारण कि ईसा की तरह आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी जीवित आकाश पर न गए हों,परन्तु मूल वास्तविकता मालूम होती है कि हज़रत ईसा की मृत्यु का भी उसी दिन फैसला हुआ और सहाबा ने इस आयत को सुनकर इसके बाद कभी दम नहीं मारा कि हज़रत ईसा जीवित हैं। चूंकि सही बुख़ारी के शब्द كُلّهم से सिद्ध हो गया कि उस समय समस्त सहाबा मौजूद थे और किसी ने इस आयत के सुनने के बाद विरोध न किया। इसलिए मानना पड़ा कि उन सब का पहले समस्त नबियों की मृत्यु पर इज्मा हो गया और यह पहला इज्मा था जो सहाबा में हुआ और अबू बक्र की ख़िलाफ़त के इज्मा से जो इसके बाद हुआ यह इज्मा बहुत बड़ा था क्योंकि इसमें किसी ने दम नहीं मारा और अबू बक्र की ख़िलाफ़त के प्रारम्भ में मतभेद

हो गया था। हाँ इस स्थान पर यह विचार आता है कि इस आयत के सुनने से पहले हज़रत उमर का हज़रत ईसा के बारे में यह मत था कि मृत्यु पा जाने के बावजूद वह भी दुनिया में वापस आएंगे। क्योंकि उन्होंने उनका रफ़ा और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का रफ़ा एक ही प्रकार का ठहराया और जबकि जानते थे कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का शरीर तो अब तक हज़रत आइशा के घर में ही पड़ा है। तो वह समानता के इक़रार के बावजूद इस बात को किस प्रकार स्वीकार कर सकते थे कि हज़रत मसीह का शरीर आकाश पर चला गया। परन्तु आयत को सुनकर उन्होंने यह विचार भी छोड़ दिया। और उस दिन समस्त सहाबा इस बात पर ईमान लाए कि इस से पहले सब नबी मृत्यु पा चुके हैं। वास्तव में बड़ा अपमान था और बहुत बड़ा पाप था कि नबी ख़ातमुर्रसूल नबियों में सर्वश्रेष्ठ नबी मृत्यु पा जाएँ, उनका शव सामने पड़ा हो और किसी दूसरे नबी के बारे में यह विचार हो कि उसकी मृत्यु नहीं हुई। वास्तव में नबी करीम के बारे में यह विचार, प्रेम और सम्मान एक स्थान पर जमा नहीं हो सकता। ईमानदारी और संयम से सोचो कि हज़रत उमर का यह कहना कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु नहीं हुई बल्कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की तरह आकाश पर उठाए गए हैं। इस विचार का खण्डन इसके अतिरिक्त कब संभव था कि हज़रत अबू बक्र हज़रत मसीह तथा समस्त पहले नबियों की मृत्यु सिद्ध करते। भला यदि हज़रत अबू बक्र का इस आयत قَدْ خَلَتْ के पढ़ने से यह इरादा न था कि हज़रत मसीह इत्यादि पहले नबियों की मृत्यु सिद्ध करें। तो उन्होंने हज़रत उमर के इस विचार का रद्द

क्या किया। हज़रत उमर के इस विचार का सम्पूर्ण दारोमदार हज़रत मसीह के जीवित उठाए जाने पर था। मालूम होता है कि कुछ सहाबा अपने विवेचन से यह समझे बैठे थे कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम जीवित आकाश पर चले गए हैं। और फिर जब आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का निधन हुआ तो हज़रत उमर फ़ारूक के दिल में यह विचार पैदा हुआ कि यदि हज़रत मसीह जीवित आकाश पर चले गए हैं तो फिर हमारे नबी अधिक हक़दार और बहुत उत्तम है कि जीवित आकाश पर चले जाएँ, क्योंकि यह एक महान श्रेष्ठता है कि ख़ुदा तआला किसी नबी को जीवित आकाश पर अपने पास बुला ले। और यह बात आत्मशुद्धि तथा उत्तम सभ्यता की दृष्टि से कुफ्र के रंग में थी कि ऐसा समझा जाए कि मानो हज़रत मसीह तो जीवित आकाश पर चले गए और वह नबी जो ख़ातमुल अंबिया तथा नबियों में सर्वश्रेष्ठ है जिसके दानशील अस्तित्त्व की बहुत सी आवश्यकताएं हैं वह स्वाभाविक आयु तक भी न पहुँचे। यदि बेईमानी और पक्षपात बाधक न हो तो यह उपरोक्त आयत इस बात पर एक बड़ा स्पष्ट आदेश है कि समस्त सहाबा की इसी पर सहमति हो गयी थी कि मसीह इत्यादि समस्त पहले नबी मृत्यु पा चुके हैं और यदि यह नहीं तो भला होश करके तथा ख़ुदा से डर कर बताओ कि उस विरोध के समय में जो हज़रत अबू बक्र की राय और हज़रत उमर की राय में घटित हुआ जिसमें हज़रत उमर अपनी राय के समर्थन में यही प्रस्तुत करते थे कि हज़रत ईसा जीवित आकाश पर उठाए गए हैं। अतः ऐसा ही आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उठाए जाएँगे और फिर क्यों बाधक और असंभव है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

उत्तम और सर्वश्रेष्ठ होने के बावजूद हज़रत मसीह की तरह आकाश पर न उठाए जाएँ। उस समय हज़रत अबू बक्र ने हज़रत उमर की राय के खण्डन में जो आयत

قَدۡ خَلَتۡ مِنۡ قَبۡلِهِ الرُّسُلُ (आले इमरान-145)

पढ़ी। इससे उनका यदि यह मतलब नहीं था कि हज़रत ईसा भी जिन का हवाला दिया जाता है मृत्यु पा चुके हैं तो फिर और क्या मतलब था और हज़रत उमर के विचार का इस के बिना कैसे निवारण हो सकता था और आप का यह कहना कि इस पर इज्मा (सर्व सम्मति) नहीं हुआ यह ऐसा स्पष्ट झूठ है कि सहसा रोना आता है कि आप लोगों की नौबत कहां तक पहुँच गई है। हे प्रिय! बुख़ारी में तो इस जगह كلّهم का शब्द मौजूद है जिस से स्पष्ट है कि उस समय कुल सहाबा मौजूद थे और उसामा की सेना जो बीस हज़ार सैनिक थे इस महान संकट जो नबियों में सर्वश्रेष्ठ की घटना के कारण रुक गई थी और वह ऐसा कौन दुर्भाग्यशाली और अभागा था जिसने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु की ख़बर सुनी और तुरन्त उपस्थित न हुआ। भला किसी का नाम तो लो। इसके अतिरिक्त यदि मान भी लें कि कुछ सहाबा अनुपस्थित थे तो अन्ततः महीना, दो महीना, छः महीनों के बाद अवश्य आए होंगे। तो यदि उन्होंने कोई विरोध प्रकट किया था और आयत قَدۡ خَلَتۡ के अन्य मायने किए थे तो आप उसे प्रस्तुत करें और यदि प्रस्तुत न कर सकें तो फिर यही ईमान और ईमानदारी के विरुद्ध है कि ऐसे सामूहिक इज्मा के विरुद्ध आप आस्था रखते हैं। हज़रत मसीह की मृत्यु पर यह एक ऐसा ठोस इज्मा है कि कोई बेईमान इस

से इन्कार करे तो करे। भाग्यशाली और संयमी व्यक्ति तो इससे हरगिज़ इन्कार नहीं करेगा। अब बताओ कि हज़रत मसीह की मृत्यु पर इज्मा तो हुआ, जीवित रहने पर कहां इज्मा सिद्ध है। बराबर तफ़्सीरों वाले ही लिख जाते हैं कि यह भी कथन है कि तीन दिन या तीन घंटे के लिए मसीह मर भी गया था। जैसे मसीह के लिए दो मौतें बताते हैं ميتة الاولیٰ तथा ميتة الاخرٰی इमाम मालिक का कथन है कि वह हमेशा के लिए मर गया, यही कथन इमाम इब्ने हज़्म का है। मौतज़िला बराबर उसकी मृत्यु को मानते हैं और कुछ आदरणीय सूफ़ियों के फ़िर्के यह आस्था रखते हैं कि ईसा मसीह मर गया। उसकी बनावट और स्वभाव पर इसी उम्मत में से कोई अन्य व्यक्ति दुनिया में आएगा और बुरूज़ी तौर पर वह मसीह मौऊद कहलाएगा। अब देखो जितने मुंह उतनी ही बातें। इज्मा कहां रहा। इज्मा केवल मृत्यु पर हुआ और यही इज्मा आप लोगों को मार गया। अब राफ़िज़ियों की तरह हज़रत अबू बक्र को कोसते रहो जिन्होंने आप की इस आस्था को जड़ से उखाड़ दिया।

اعلموا رحمکم اللّٰہ ان حاصل کلامنا هذا ان الاجماع علٰی موت المسیح عیسی بن مریم وغیرہ من النبیین الذین بعثوا قبل سیدنا ورسُولنا المصطفٰی صلی اللّٰہ علیه وسلم ثابت متحقق بالنصوص الحدیثیة القطعیة والروایات الصحیحة المتواترة ویعلم کل من عندہ علم الحدیث ان هذا الاجماع قد انعقد فی ناد محشود و محفل مشهود عند اجتماع جمیع بدور الاصحاب وبجور الالباب فما تناضلوا بالانکار ومارَدّوا رأی

امامهم المختار وما ذكروا شيئا من هفوته وما صالوا علىٰ فوهته بل سكنت عند بيان الصديق قلوبهم ومالت الى السلم حروبهم ووجدوا البرهان المحكم والدليل القوىّ الجليل فتحاموا القال والقيل وصُقِلَ الخواطرُ وانار القلوبُ ونشط الفاتر وكانوا قبل ذالك غرضَ اللّظى او كرجل التهبت احشاء ه بالطوٰى بما عيل صبرهم بموت النبيّ سيدهم المصطفٰى محمدنالمجتبٰى وبما قلقت قلوبهم وصارفؤادهم فارغا بما فقد وا حبّهم خير الورىٰ وكانوا كالمبهوتين فاذا قام عبد الله الصديق فتح عليهم باب التحقيق و اَروَاهُم من هٰذا الرحيق و قُضِى الامرواُزيل الشبهاتُ وسكنت الاصواتُ وانعقد الاجماع علىٰ موت المسيح وسائر الانبياء الماضين بل هو اوّل ما اجمع عليه الصحابة بعد موت خاتم النبيين ولهٰذا الاجماع شان اكبرمن اجماعٍ انعقد علىٰ خلافة ابى بكر نالصديق فانّ الصحابة اتفقوا عليه كلهم وما بقى من فريق وقبلوا ذالك الامرمن غير تردّد وتوقفٍ بل بأتمّ الاذعان واليقين وكان كلهم يتلون الآيت ويُقرُّون بموت الرسل ويبكون على موت سيّد المرسلين حتّى اذا سمع الفاروق الاٰية قال عُقِرت وما تقلنى رجلاى وكان من الحزن كالمجانين وقال حسّان وهو يرثى رسُول الله صلّى الله عليه وسلم

كنت السواد لناظرى فعمى عليك الناظر
من شاء بعدك فليمت فعليك كنت احاذر

يعنى اى سيّدى وحبيبى كنت قرّة عينى فَفَقَدَ نُور عينى بفُقدانك ولا ابالى بعدك ان يموت عيسىٰ او مُوسىٰ اونبى

آخرفانى كنت عليك اخاف فاذامتَّ فليمت من كان من السّابقين وفى هٰذه اشارة الٰيانّ الاٰية التى تلاها الصديق نبّهت الصحابة علىٰ موت الانبياء كلهم فمابقى لهم همّ فى شانهم مثقال ذرّة وما كانوا متأسفين بل استبشروا بموت الجميع بعد موت رسُولهم الامين ولوكان الامر خلاف ذالك اعنى ان ثبت حيٰوة احد من الانبياء السابقين بنصّ القرآن وبآية من آيات الفرقان فكادوا ان يموتوا اسفا علىٰ رسولهم و كادوا ان يلحقوا بالميتين ولكنهم لمّا علموا ان رسُولنا صلّى الله عليه وسلّم ليس بمنفرد بورود الموت من الله العلّام بل الانبياء كلهم ماتوا من قبل وسقوا كأس الحمام تهلّلت وجوههم واستبشرت قلوبهم فكانوا يتلون هٰذه الاٰية فى سكك المدينة واسواقها ومات المنافقون ولم يبق لهم سعة ان يعترضوا على الاسلام بموت نبينا الصبيح وحيات المسيح فالحمد لله علىٰ هٰذا العون الصريح ان كلمة الاسلام هى العليا ويبرق نوره من كل جنب وشفا والله ارسل محمّدًا وهويكرمه الى يوم الدين واذا ثبت الاجماع ولم يبق القناع وسطع الصبح وازال الظلمة الشعاع فاسئل المنكرين مابقى من عذرهم وقد حصحص الحقّ النباعُ و كُرّر الثبوتُ واحكمت الاضلاعُ و كمل الادواء والاهجاعُ فمن ادعى بعد ذالك علىٰ رفع هذاالاجماع وعزا امرنا الى الابداع فعليه الدليل القطعى من الكتاب والسنة واثبات اجماع انعقد علىٰ حيات المسيح فى عهد الصحابة وانّى لهم هٰذا ولو ماتوا متفكرين و كيف وليس عندهم حجة من الله وليس معهم سلطان مبين ان يتبعون الّا

آباء هم الذين كانوا مخطئين قست القلوب ورُفعت الامانت
وما بقى فيهم الا فضول الهذر وما بقى فيهم من يطلب
كالمتقين و اذا قيل لهم آمنوا بمن جائكم من عند ربكم
علٰى رأس المائة وعند ضرورةٍ احسّها قلوب المؤمنين
قالوا لا نعرف من جاء وما نراه الا احدًا من الدجّالين وقد
عُلِّموا انّه يجيئهم حكمًا عدلًا ويحكم بينهم فيما كانوا
فيه مختلفين فكيف يصير حاكمهم محكومهم و كيف
يقبل كلما اجمعوا من رطب ويابس مالهم لا يتفكرون
كالعاقلين و يسبّوننى عدوا بغير علم فالله خير محاسبا
وهو يعلم ما فى صدور العالمين وقد كانوا يستفتحون
من قبل ويعدّون المائين فلمّا جاء هم من يرقبونه نبذوا
وصايا الله ورسُوله وراء ظهورهم كانه جاء فى غير وقته
و كانهم ما عرفوه من علامة و كانوا من المعذورين الم
يروا كيف يتم الله به الحجّة بآيات السماء ويعصم عرض
رسُوله من قوم كافرين بل كفروا به وقالوا فاسقٌ ومن
المفترين فسيعلمون من فسق ومن كان يفترى على الله
وان الله لا يخفى عليه خافية والله لا يجعل عاقبة الخير اِلّا
لقوم متقين و ما قيل لى الّا ما قيل للرسل من قبل تشابهت
القلوب وزُيّن لهم اعمالهم وحسبوا انهم يعطون الثواب
على مايؤذوننى ويدخلون الجنّة بالتحقير والتكذيب
والتوهين و كفّرونى وفسّقونى و كذّبونى وجهّلونى وقالوا
كافرٌ شرّالنّاس ولوشاء الله لما قالوا ولٰكن ليتمّ ماجاء
فى نبأ خير المرسلين وماينطقون الّا بطرًا ورياءَ الناس
ولا يدبّرون الاَمْرَ كالمنصفين ولا تجدفى قلوبهم احقاق

الحق كالصالحين بل تجد كثيرا منهم يكيدون كل كيدٍ ليطفئوا نور الله بافواههم وما كانوا خائفين الا يقرء ون القراٰن اَوَلا يجاوزحناجرهم اوصاروا من المعرضين الا يعلمون كيف قال الله يا عيسٰى انّى متوفّيك وقال فلمّا توفّيتنى فما يقبلون بعد كتاب مبين الا يذكرون ان اجماع الصحابة قد انعقد علٰى موت الانبياء كلّهم اجمعين ايرتابون فيه او كانوا من المعتدين مالهم لا يذكرون يومًا مات فيه رسُول الله وثبت معنى التوفّى بموته وجمع فى الصحابة كرب الاوّلين والاٰخرين ونزلت عليهم مصيبة لن ينال كمثله احدمن العالمين وقال بعضهم لا نسلم موت رسُول الله وانه سيرجع لقتل المنافقين فحينئذ قام منهم عبد كان اعلم بكتاب الله وايّده الله بروحه فصارمن المتيقظين وقال ايّها الناس ان محمدًا مات كمامات اخوانه من النّبيّين من قبله فلا تصرّوا علٰى ما تعلمون ولا تكونوا من المسرفين وقرء الاٰية وقال

وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ اَفَا۟ئِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ ؕ وَمَنْ يَّنْقَلِبْ عَلٰى عَقِبَيْهِ فَلَنْ يَّضُرَّ اللّٰهَ شَيْـًٔـا ؕ وَسَيَجْزِى اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ ۝ (आले इमरान-145)

فماكان من الصحابة من خالفه اوتصدى للجدال كالمنكرين ورُفع النزاع الذى نَشَأ بين الصحابة وقاموا من المجلس معترفين باكين ولا يخفى انّ مقصود الصديق رضى الله عنه من قراءة هٰذه الاٰية ما كان الّا تعميم الموت وتسكين القلوب المضطرة بعموم هٰذه السنة و تنجية المحزونين

ممّا نزل عليهم و تسلية المُضطرين وافحام المنافقين الضاحكين ولو فرضنا ان الاٰية تدل علىٰ موت زمرة من الانبياء فقط لا على موت سائر النبيين فيفوت المقصود الذى تحرّاه الصديق بقراء ة هٰذه الاٰية كما لا يخفى على العالمين فان ابابكر رضى الله عنه ما كان مقصده من قرأتها الا ان يبطل ما زعم عمر ومن معه من حيات نبيّنا صلّى الله عليه وسلم وعوده الى الدنيا مرة اخرىٰ ولا يحصل هٰذا المقصود من هٰذه الاٰية التى قرء ت اِستدلالا الّا بعد ان تُجْعل الاٰية دليلًا وبُرهانًا علىٰ مَوتِ جميع الانبياء الماضين وليس بخفى ان مقصد ابى بكر من قرائة هذه الاٰية كان تسلية الصحابة بتعميم سنة الموت وتبكيت المنافقين وازالةٓ مااخذ الصحابة بموت نبيهم من قلق و كرب وضَجرٍ وبكاء وانين فلو كان مفهوم الاٰية مقصورا علىٰ ذكر موت البعض وحيات البعض فباىّ غرض قرأها ابوبكر فانها كانت تخالف ماقصده بهٰذا المعنٰى وما كانت قراء تها مفيدةً للسامعين وما كان حاصلها الا ان يزيد قلق الصحابة ويزيد حُزنهم فوق ما اُحزنوا و يسحّ الاجاج علىٰ جرح المجروحين فان رسولهم الذى كان احبّ الاشياء اليهم و كان جاء هم كالعهاد و كانوا يرقبون اثمار بركاته رقبة اهلّة الاعياد مات قبل اتمام آمالهم وقبل قلع المفسدين واقيالهم بل مات قبل اهلاك الكاذبين الذين ادعوا

النبوّة وثوّروا الفتن فى الارضين فلوكان ابن مريم وغيره احياءً من غير ضرورةٍ ومات نبيّنا الذى كانت ضرورته لاُمّةٍ من غير ريبة وشُبهةٍ فاىُّ رُزىٍ كان اكبر من ذالك لهٰؤلاءِ المخلصين۔ و اىّ مصيبةٍ كانت اصعب من هذه المصيبة لقوم فقدوا نبيهم خير النبيين فلذٰلك كانوا يرجون طول حيات النبى النبيل وما كان احد منهم يظنّ انه يموت بهٰذا الوقت وبهٰذا العمر القليل۔ ويرجع الٰى ربّه الجليل و يتركهم متألمين۔ فحسبوا موته فى غير اوانه وقبل قطع الشوك و ارواء بستانه۔ وقبل اجاحة مسيلمة الكذّاب واعوانه فاخذهم مايأخذ اليتامى الصغار عند هلاك المتكفّلين۔ وهذا اٰخر ما اردنا فى هٰذا الباب والحمدُ لله رَبّ العالمين۔

## समाप्त

<u>लेखक</u>

<u>मिर्ज़ा गुलाम अहमद आफ़ा हुल्लाहु व अय्यद</u>